



जनवरी-2022

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका

# अक्षर



नालको  **NALCO**

नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड  
(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक 'नवरत्न' लोक उद्यम)

निगम एवं पंजीकृत कार्यालय

पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013



लीन स्लरी परियोजना का शुभारंभ



वार्षिक साधारण बैठक - 30.09.2021



संविधान दिवस पर शपथ ग्रहण करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय

# अक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका  
जनवरी-2022

## मुख्य संरक्षक

श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

## संरक्षक

श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन)

श्री एम.पी. मिश्र, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी)

श्री बी. के. दास, निदेशक (उत्पादन) एवं निदेशक (वाणिज्यिक)- अतिरिक्त प्रभार

श्री रमेश चंद्र जोशी, निदेशक (वित्त)

श्री सोमनाथ हंसदा, मुख्य सतर्कता अधिकारी

## सलाहकार

श्री आशुतोष रथ, महाप्रबंधक (निगम संचार)

## संपादक

श्री रोशन पाण्डेय, उप प्रबंधक (राजभाषा)

## सह-संपादक

श्री हिमांशु राय, उप प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

श्री पवन कुमार त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुळ

डॉ. धीरज कुमार मिश्र, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी

नालको  NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम)

निगम एवं पंजीकृत कार्यालय

पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013

वेबसाईट : <http://www.nalcoindia.com>

ईमेल: [asutosh.rath@nalcoindia.co.in](mailto:asutosh.rath@nalcoindia.co.in)

## सीमित वितरण हेतु

पत्रिका में छपने वाले विचार  
लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था  
या संपादक का सहमत होना  
आवश्यक नहीं।

# विषय-सूची

हिन्दी आजकल	नीलिमा पंडा	12
सकल घरेलू उत्पाद के सुधार में स्वरोजगार का योगदान	अनुज कुमार	14
भारत के आर्थिक विकास में एल्यूमिनियम उद्योग और नालको की भूमिका	विवेक कुमार साहू	15
स्वतंत्र भारत @ 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता	चिरंतन श्याम	17
कोरोना	कुँवर सिंह कोड़ाह	20
समग्र प्रदर्शन हेतु सम्मिलित प्रयास	प्रबीण कुमार सामल	24
युवाओं में तनाव : कारण और निदान	अशोक कुमार साहू	25
आर्थिक सुधार नीति और भारत का भविष्य	गौतम कुमार सिंह	27
स्वास्थ्य: सर्वोत्तम धन	श्वेता रानी	29
मकसद	सदाशिव सामन्तराय	31
जन स्वास्थ्य सुविधाएँ और महामारी	बालगोपाल राजू	34
थर्ड जेंडर का समाज और उनकी समस्याएँ	कृष्णा कुमारी	35
माँ चली जाती है.....	सोनी कुमारी	37
यूँ अकेले कहाँ हैं हम	डॉ. धीरज कुमार मिश्र	38
कदम बढ़ा!	विनय कुमार	39
तल्लियां	सुनील कुमार	39
कविताएँ	डॉ. अशोक कुमार जोशी	40
बेटे की चिट्ठी	स्वाती तिवारी	41

प्रल्हाद जोशी  
PRALHAD JOSHI  
ಪ್ರಲ್ಹಾದ ಜೋಶಿ



संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री  
भारत सरकार  
नई दिल्ली  
MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS,  
COAL AND MINES  
GOVERNMENT OF INDIA  
NEW DELHI



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजभाषा कार्यान्वयन और इसके प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए नेशनल एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (नालको), भुवनेश्वर; तखवर्ष और विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अपनी हिंदी गृह ई-पत्रिका 'अक्षर' जनवरी-2022 अंक का प्रकाशन कर रहा है।

किसी भी कार्यालय में राजभाषायी विस्तार के लिए हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और यह पाठकों के ज्ञानवर्द्धन का मार्ग प्रशस्त करता है। 'अक्षर' में नालको के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों द्वारा रचित तकनीकी आलेख, साहित्यिक लेख, कविताएं, कहानियां और रोचक रचनाओं के संकलन के माध्यम से राजभाषा हिंदी के अनुपालन संबंधी संवैधानिक दायित्व के निर्वहन के साथ-साथ भाषा एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं विकास को गति मिल रही है। उनके इस योगदान के लिए नालको परिवार के सभी सदस्य प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि 'अक्षर' का प्रकाशन भविष्य में भी नियमित रूप से जारी रहेगा और पूर्व के अंकों की तरह अपना लक्ष्य प्राप्त करता रहेगा। हिंदी गृह ई-पत्रिका 'अक्षर' जनवरी-2022 अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

प्र. वे. जोशी  
(प्रल्हाद जोशी)

Office : Room No. 15, Parliament House, New Delhi-110001, Tel : 011-23017780, 23017798, 23018729, Fax : 011-23792341  
Office : Room No. 353, 'A' Wing, 3<sup>rd</sup> Floor, Shastri Bhawan, New Delhi, Tel : 23387277, 23383109, 23386402  
Residence : 11 Akbar Road, New Delhi-110001, Tel : 011-23014097, 23094098,  
H. No. 122-D, 'Karnitartha' Mayuri Estate, Keshwapur, Hubli-580023 (Karnataka)  
Tel. No. : 0836-2251055, 2258955, E-mail : pralhadvjoshi@gmail.com

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.  
सचिव  
ANSHULI ARYA, I.A.S.  
Secretary



भारत सरकार  
राजभाषा विभाग  
गृह मंत्रालय  
GOVERNMENT OF INDIA  
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE  
MINISTRY OF HOME AFFAIRS



पत्र सं०- 11014/28/2020-21-रा.भा.(पत्रिका)

दिनांक : 23 दिसंबर, 2021

### संदेश

यह हर्ष और गौरव का विषय है कि नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको), भुवनेश्वर द्वारा अपनी हिंदी छमाही गृह पत्रिका "अक्षर" के जनवरी, 2022 अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

2. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था - "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।" यह सर्वविदित है कि राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हिंदी का महत्व जनभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ रहा है।

3. यह हमारा कर्तव्य है कि राष्ट्रीय हित एवं एकात्मकता के लिए हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह-पत्रिकाओं का उद्देश्य है अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मूल लेखन एवं अपने शासकीय कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना। मुझे विश्वास है कि नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी छमाही गृह पत्रिका "अक्षर" का जनवरी, 2022 अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

4. मैं पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए इस पत्रिका के संपादक मंडल के साथ-साथ नालको, भुवनेश्वर के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इस प्रकार के सफल एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

अंशुली आर्या 23/12  
(अंशुली आर्या)

## अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

सर्वप्रथम आप सभी को नूतन वर्ष 2022 की हार्दिक शुभेच्छा!

नवीन वर्ष का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। चुनौतियाँ अपने साथ अवसर भी लेकर आती हैं और अवसर को सुअवसर में बदलने की कला ही, सफलता का आरंभ होता है। इस विचार के साथ, यह प्रतीत होता है कि वर्तमान अंक में प्रकाशित लेख हममें नए विचार, नयी समझ और नए प्रयास को उभारेंगे। जो हमें अपने वर्तमान में रहकर भविष्य के लिए तैयार तो करेगी ही, साथ ही मानव-जाति के प्रति भी हमें अपने दायित्व को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगी।



नालको व्याख्यान माला के 20वें संस्करण के दौरान महामहिम राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल द्वारा समाज से मानव, विज्ञान, पर्यावरण तथा ईश्वर के बीच सौहार्द्र बनाए रखने हेतु प्राणी, प्रकृति तथा प्रेम की आधाररेखा का पालन करने हेतु किया गया आह्वान निश्चित ही कई मायनों में सार्थक होता है और हमारी विचार-प्रक्रिया को कई आयाम प्रदान करता है।

आप सभी जानते हैं कि हमारे नालको ने अपने स्थापना के 42 वर्ष पूर्ण करते हुए सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं। इस सफलता की यात्रा के दौरान हमारी राजभाषा हिंदी भी लगातार हमारे लिए मार्ग प्रशस्त करती हुई, हमें नए मुकाम हासिल कराने में मददगार रही है। हमारी अब तक की विकास गाथा उत्पादन, उत्पादकता, मानव-संसाधन, परिवेश एवं प्रयास (अभिलाषा) के पाँच मंत्रों पर आधारित रही है। मुझे आशा है कि चल रही विकास परियोजनाओं तथा रणनीतिक पहल के साथ कर्मचारियों के समर्पण, अनुशासन और दृढ़ संकल्प से नालको व्यावसायिक उत्कृष्टता के नए अध्यायों का रचयिता बनेगा। साथ ही इसी लगन से राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप निर्धारित लक्ष्यों को भी प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

आगे बढ़ने के क्रम में राजभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा, व्यवसाय भाषा और विश्व भाषा के रूप में भी हिंदी की लोकप्रियता, प्रसार एवं स्वीकार्यता को देखा जा रहा है। यकीनन यही विकास यात्रा विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) के महत्व को और भी बढ़ा देती है। आज हिंदी केवल भारत के ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर भी अपनी गरिमा को प्राप्त कर रही है। जो हर भारतवासी के लिए गर्व का पर्याय है। हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की वाहक है, जो परंपरा को समृद्ध करती हुई आगे बढ़ रही है। जो मानव-जाति की पोषक है।

तथापि आज पूरी मानव-जाति कोरोना महामारी के तीसरे लहर से गुजर रही है, फिर भी अपनी सावधानियों एवं आपसी सहयोग से हम इसे भी पार कर नए आत्मविश्वास के साथ उभरेंगे, यह तय है। इस संदेश के माध्यम से मैं अपने प्रिय नालकोनियन और सभी पाठकों से यह आह्वान करूँगा कि, कोविड नियमों एवं दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए अपना एवं अपनों का स्वास्थ्य सुनिश्चित करें। हमने पहले भी मुश्किल परिस्थितियों का सामना करते हुए, पूरे विश्व को अपने असाधारण सोच व आसाधारण कौशल का परिचय दिया है। इसलिए घबराने की आवश्यकता तो है ही नहीं, आवश्यकता है बस आपसी तालमेल और सहयोग की। इस समय में हमें अपने उम्मीद और विश्वास के साथ आगे बढ़ना है।

व्यक्त ही समाज का केंद्र होता है। व्यक्ति ही कार्यालय और परिवार की कड़ी होता है। हम अपने कार्यालय में रहते हुए अपने दूसरे घर में होते हैं। कार्यालय ही हमारी दूसरा घर है। इसलिए जरूरी यह भी है कि, जैसे परिवार के साथ हम प्रेम, आपसी सहयोग और लगाव, तालमेल के साथ रहते हुए परिवार को खुशहाल बनाने में अपना योगदान देते हैं। अपने कार्यालय(दूसरे घर) में भी अपने सहकर्मियों के साथ एक खुशनुमा परिवेश के लिए अपना योगदान दें। इससे हमारी कार्यक्षमता भी बढ़ती है और आपसी लगाव, तालमेल भी। कार्य और कार्यालय हमारे जीवन का एक पहलू है, पूरा जीवन नहीं। जब कि, परे जीवन का केंद्र है-मानव संबंध, आपसी सहयोग, सद्भाव और सौहार्द जिससे पूरी मानव जाति संचालित होती है। इसलिए कार्यालय में भी इन्हीं मानव मूल्यों के साथ रहने, जीने एवं कार्य को करने का प्रयास सभी के लिए बेहतरीन परिणाम देने वाला होगा।

आइए! हम सब मिलकर संकल्प लें कि वर्ष 2022 के दौरान हम नालकोनियन अपने कर्म से केवल अपने परिवार या भारतवासी ही नहीं बल्कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" की संकल्पना को साकार करते हुए, मानवता की मिसाल कायम करते हुए, अपने सामर्थ्य से पूरे विश्व को कोरोना महामारी के साथ-साथ वैचारिक व आर्थिक रूप से उबारने का प्रयास करेंगे।

स्वस्थ-शरीर, स्वस्थ-मन और स्वस्थ-मस्तिष्क के साथ "हम छुएंगे आसमान!"

(श्रीधर पात्र)

## निदेशक (मानव संसाधन) की कलम से...



प्रिय साथियों,

स्वामी विवेकानंद जयंती (12 जनवरी) "युवा दिवस" के रूप में उत्सव का स्वरूप है। जिनकी स्थापना है- "विनम्र बनो, साहसी बनो और शक्तिशाली बनो।" इसमें कोई संदेह नहीं कि अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी सभ्यता के साथ ही हम अपनी अमिट पहचान बना सकते हैं। जिसकी पोषक हमारी भाषा ही है। हिंदी इसी का परिचायक है, इसी की पोषक है। हमारी आजादी में भी इसका योगदान अविस्मरणीय है। आज आजादी के 75 वर्षों के अमृत महोत्सव के साथ हम अपनी भारत-भूमि का गौरव-गान कर रहे हैं। भाषा इसका एक आवश्यक पहलू है। हिंदी के साथ पूरे भारत की एकता और अखंडता का भाव जुड़ा हुआ है। जो विश्व में भारत के सम्मान और गौरव का प्रतीक है। कई चैनलों के प्रसारण हिंदी में आ रहे हैं। यह विश्व में हिंदी की ताकत है और भारतीयों का अभिमान है। आइए इस अभिमान का सम्मान करें। हिंदी को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

वर्ष 2022 का हर आने वाला पल आपके जीवन में एक बेहतरीन अनुभव, सुख, खुशहाली, स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर आए इस कामना के साथ आप सभी को शुभकामनाएं...

समय के साथ हम अपने अनुभव, समझ और प्रयास के साथ आगे बढ़ते हुए कंपनी के 43 वें वर्ष की ओर अग्रसर हैं। जो हमारे मजबूत बुनियाद, प्रगतिशील प्रयास और वैज्ञानिक तकनीकी का परिचय भी प्रदान कर रही है। सभी के सम्मिलित प्रयास से ही उत्पादन, उत्पादकता और सतत विकास को हासिल करते हुए कंपनी ने कई नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। पिछले समय में आपसी सहभागिता और सतत प्रयास से ही कंपनी की लाभप्रदता में भी बढ़ोतरी हुई है। कंपनी के लिए प्रत्येक कर्मचारी का योगदान, उनकी ऊर्जा, सकारात्मक सोच, नव-निर्माण की क्षमता और सामर्थ्य के साथ श्रेष्ठता का संकल्प ही नालको की प्रगति का साधन भी है और साध्य भी।

साधन और साध्य के इस सम्मिलित परिदृश्य में विश्व भाषा के रूप में अपना मुकाम हासिल करने वाली राजभाषा हिंदी के साथ नालको भी आगे बढ़ रहा है। विश्व के विभिन्न देशों को जाने वाले नालको के उत्पाद पर उत्कृष्ट नालको के द्विभाषी लोगो में हिंदी का भी विश्व सफर हो रहा है।

स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों के साथ अपना, कंपनी का और देश का नव-निर्माण सुनिश्चित करें। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में कहें तो- "उठो जागो! और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए..।"

हिंदी के विश्व स्वरूप के साथ भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज और परंपरा भी विश्व में अपना स्थान हासिल कर चुके हैं। इस स्वरूप के साथ आप सभी के प्रति विश्व हिंदी दिवस की शुभकामना भी व्यक्त करता हूँ। साथियों हिंदी एक भाषा होने के साथ ही साथ हमारी जातीय पहचान भी है।

(राधाश्याम महापात्र)

**नेशनल एल्यूमिनियम कम्पनी लिमिटेड**

(भारत सरकार का एक उद्यम)

निगम कार्यालय

नालको भवन, पि-1, नयापल्ली, भुवनेश्वर - 751 013, भारत

फोन Telephone: (EPABX) (0674) 2301988, 2301999, 2300013, 2300976, 2301550, 2303233.

फैक्स Fax-(0674) 2301290, 2300580, 2300740, 2300640 & 2300246, वेबसाइट Website: www.nalcoindia.com

CIN: L27203OR1981GOI000920

**National Aluminium Company Limited**

(A Government of India Enterprise)

CORPORATE OFFICE

Nalco Bhawan, P/1, Nayapalli, Bhubaneswar - 751 013, India





भारत सरकार  
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,  
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र),

-- x --

234/4, ए.जे.सी. बोस रोड,  
निजाम पैलेस, कोलकाता-20

संख्या- 24/2/2015-क्षे.का.का.(कोल)/3629

दिनांक- 13.01.2022

### संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि नालको, निगम कार्यालय, भुवनेश्वर द्वारा अपनी छमाही गृहपत्रिका 'अक्षर' जनवरी, 2022 अंक का प्रकाशन करने जा रही है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में राजभाषा पत्रिकाओं की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 'अक्षर' पत्रिका द्वारा सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में अत्यंत सराहनीय कार्य किया जा रहा है। उक्त पत्रिका ने नालको के अधिकारियों एवं कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ उन्हें अपनी साहित्यिक प्रतिभा को निखारने के लिए भी एक मजबूत मंच प्रदान किया है जो कि एक प्रशंसनीय प्रयास है।

मैं 'अक्षर' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा इसकी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देता हूँ एवं इसके संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(निमेष कुमार दुबे)

सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)  
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र)  
फोन/फैक्स-033-22800356

### 'मैं' हूँ कौन और 'तुम' क्या हो.....

'मैं' और 'तुम' यूँ तो सृष्टि के विकास की प्रक्रिया है। समाज की एक मूलभूत आवश्यकता है। परिवेश का सृजन है। धरती के जीवन का एक आवश्यक पहलू है। सृजन की धुरी है। संबंधों के नामकरण की आवश्यकता है। जैसे जिस रूप-स्वरूप और शकल में भी परिभाषित, व्याख्यायित, अभिव्यक्त, स्पष्ट किया जाए, किया जा सकता है।



इन दोनों के साथ-साथ, परस्पर समागम-सृजन की आवश्यकता एवं प्रक्रिया दोनों को ही आधार देता है; कुछ हद तक यह भी उपयुक्त ही लगता है। 'मैं' भी कभी-कभी 'तुम' और 'तुम' भी कभी-कभी 'मैं' या व्याकरणिक शब्द प्रक्रिया के संदर्भ में कहें और समझें तो अन्य कई सर्वनाम का नाम होकर प्रयुक्त होता है। वाक्य को गति और मानव जीवन को चिंतन भी देता है। पर यही चिंतन प्रक्रिया अमूमन अवास्तविक, अस्वीकार्य, अस्पष्ट होकर समाज, परिवार, परिवेश, व्यक्ति और सृष्टि की परिभाषा ही परिवर्तित कर देती है। शकल का बदल जाना तो फिर भी खैर वाली बात हो गई, पर चिंतन की आवश्यकता तब अधिक पड़ने लगती है; जब बाहरी शकल के अनुसार भीतरी संरचना और समझ भी अपना आकार-प्रकार बदलने लगते हैं।

बदलाव वैसे तो श्री और इति के बीच की पुलिया है। सतत-चिर प्रक्रिया है। लेकिन बदलाव की एक सीधी सी कहानी सृजन से, प्रेम से, सद्भाव से, बेहतरी से, उन्नयन से जुड़ा हुआ होना उसका श्रेष्ठ स्वरूप है। जिसकी कामना 'मैं' के रूप में हर व्यक्ति करता है। जो इस संसार की सबसे छोटी इकाई भी कही जा सकती है। पर सवाल यह नहीं है कि यह छोटी इकाई कामना क्या करती है? चाहती क्या है? विचार तो इस पर किया जाना है कि इसका असर, इसकी भूमिका, इसका महत्व और इसका योगदान कितना महत्वपूर्ण है; क्योंकि इतिहास इस बात का साक्षी बन चुका है कि **“एक अकेला चना भांड फोड़ सकता है।”** यह अकेला चना, यह छोटी इकाई, यह 'मैं' है कौन? वह हर एक तुम, आप, वह है जो परिवार, समाज, परिवेश, देश, कार्यालय या कहीं भी दिखता है, साँस लेता है, जीता है, हँसता है, बोलता है, मानव शरीर धारण करता है, खुश होता है या फिर रोता भी है। यह 'मैं' खुद भी हूँ, 'आप' भी हूँ जो इस समय यह पढ़ रहे हैं या आपके आस-पास दिखने वाला हर प्राणी है। जो स्थिति और अवस्था के अनुसार अपनी भूमिका, अपनी परिस्थिति बदलता रहता है।

जी हाँ, 'मैं' में दिखने वाले 'हम' सभी की भूमिका हमारे परिवार, हमारे कार्यालय और हमारे समाज के लिए बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। किसी 'तुम' या 'आप' के कारण यदि 'हम' अपनी भूमिका से दूर होते हैं, तो 'हम' अपने परिवार और अपने कार्यालय के साथ बेईमानी करते हैं। यह हमसे ही बनता है, इसलिए इसके खुशहाली का दायित्व भी हमारा ही है। एक खुशी परिवार का सदस्य ही एक खुशी कार्यालय और खुशी समाज के साथ देश को भी खुशी बनाने में अपना योगदान देता है। किसी भी स्थान या अवस्था में मानव ही श्रेष्ठ होता है। और भावना के रूप में श्रेष्ठ होती है-मानवता। सभी का अंत एक ही है। इसलिए इस जीवन यात्रा में इस श्रेष्ठ भावना के साथ परिवार-कार्यालय के वातावरण को आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास सभी द्वारा किया जाना चाहिए।

एक व्यावहारिकता यह भी है कि, हम अपने घर-परिवार के बाद सबसे ज्यादा समय अपने कार्यालय में ही गुजारते हैं। तो सभी सहकर्मी एक-दूसरे से इस परिवार के सदस्यों के रूप में ही जुड़े हुए हैं। सभी के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार न केवल माहौल को खुशनुमा कर देता है बल्कि, इससे गुणवत्ता और कार्य-कुशलता भी क्रमशः बेहतर होती चली जाती है। मुश्किल लक्ष्यों को प्राप्त करना भी सामूहिक प्रयास से आसान हो जाता है। सभी एक दूसरे के साथ, एक दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ते हैं और आगे बढ़ाते हैं। एक सफल व्यक्ति के रूप में यह 'मैं' और 'तुम' मिलकर, एक खुशहाल और समृद्ध संसार के सृजन का प्रयास करते हैं। जहाँ से समाज और देश के निर्माण का भी सफ़र शुरू होता है।

इस चर्चा के बीच में एक अहम बात यह भी है 'मैं' से 'तुम' के स्थिति-अवस्था परिवर्तन में आखिर व्यक्ति के

सिद्धांत में क्या फर्क आ जाता है? जब तक मनुष्य 'मैं' या 'मेरा' के रूप में सोचता और करता है, तब-तक उसके सिद्धांत और व्यवहार की समझ का स्वरूप कुछ और होता है, पर जैसे ही वही 'मैं', 'तुम' या 'आप' या कोई और होकर करता और सोचता है, तो फिर सिद्धांत और व्यवहार का स्वरूप बदल जाता है। चाहे परिस्थिति एक ही क्यों न हो। ऐसा होता इसलिए है कि 'मैं' के रूप में हममें 'मेरा' निहित होता है। जो हमें अपने सुख, फायदे के बारे में बताता और समझाता है। जब हम 'मैं' के रूप में सोचते हुए 'तुम' या 'आप' की तरह से समझना और विचार करना आरंभ कर देंगे, तो फिर इस 'मैं' और 'तुम' या 'आप' का फर्क धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। आइए इस प्रयास के साथ अब जयशंकर प्रसाद की पंक्ति से शीर्षक को पूरा करते हैं-

**मैं हूँ कौन, और तुम क्या हो! इसमें क्या है, धरा सुनो,  
मानस जलधि रहे चिर-चुम्बित मेरे क्षितिज उदार बनो...**

सच्चाई भी यही है कि यही उदारता, मानव-मानव के या मानव-अमानव के फर्क की पहचान भी है और कारण भी। हम जहाँ हैं, जैसे हैं, वहाँ-वैसे अपने आस-पास खुशहाली-प्रेम-अपनापन-भलाई-भाईचारा-सहयोग रखकर एक-दूसरे के साथ पूरे कार्यालय और देश के लिए बेहतरीन परिस्थिति का निर्माण कर सकते हैं। केवल चेहरे की मुस्कराहट के साथ अच्छी तस्वीर की चाहत को मन और व्यवहार के प्रेम तक विस्तृत कर चरित्र-व्यक्तित्व को भी सुंदर बनाने के प्रयास से परिवर्तन का सिलसिला शुरू किया जा सकता है।

एक दूसरे से जुड़ाव ही हमारे आपसी व्यवहार और आपसी समझ को नियंत्रित करती है। इस जुड़ाव के लिहाज से हिंदी देश को 'मैं' और 'तुम' को, क्रेता-विक्रेता को, खेल-खिलाड़ी को, व्यक्ति-परिवेश को, नेता-जनता को जोड़ने का सफलतम प्रयास कर रही है। देश के प्रत्येक स्थान का प्रत्येक जाति, समुदाय, वेश-भूषा का भाषी हिंदी बोलता-जानता-समझता है, हाँ यह बात अब भी विचारणीय है कि, व्यक्ति की मानसिक सीमा या जटिलता को भाषा की सीमा या जटिलता नहीं समझा जा सकता। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि, हिंदी के साथ भारत की सभी भाषाओं के शब्द आज विश्व में फैल रहे हैं। देश को भाषिक स्तर पर भी एक पहचान प्राप्त होने(!), दिलाने(?) की आवश्यकता पर विचार कब से किया जा रहा है। सवाल अब यह भी होना चाहिए कि, किया कब तक जाएगा? स्वामी विवेकानन्द का कथन कि-**“उठो जागो! और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।”** प्रेरित करते हैं, झकझोरते हैं शायद यही प्रेरणा ही है कि, हम भारत-वासी एक दूसरे के साथ(!) मिलकर(?) देश के राष्ट्र-भाषा प्राप्त करने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। वैसे भी **“हूँदोगे तो रास्ते मिल जाएंगे, मंजिलों की फितरत है खुद, चलकर नहीं आती”**। आजादी के 75 वर्षों के सिलसिले में।

बड़ा बनने के हमेशा से दो प्रयास रहे हैं, या तो खुद बड़ा बनो या जिससे बड़ा बनना है उसे छोटा करो। अब एक तीसरा भी प्रचलन में है, जिसे कि राजनीति की हवा का उपफल(बाइप्रोडक्ट) भी कह-मान सकते हैं(!), वह है किसी तीसरे को पहले से बड़ा बनाओ और खुद उसके साथ हो जाओ!, ऐसे में जन्मी प्रतिस्पर्धा व्यक्ति को भाषा, परिवेश, संस्कृति, जाति, मानव और किसी से भी मूलतः दूर कर केवल और केवल महत्वाकांक्षी बना देती है। फिर उस स्थिति विशेष में मानव-मानव, मानव-अमानव, मैं-तुम और आप का भेद-विभेद जाते रहते हैं और जो स्थाई रह जाती है, वह है- महत्वाकांक्षा। फिर भी इन सभी के बीच या साथ भी, स्वीकार्य और बेहतर का प्रयास तो किया ही जा सकता है और किया भी जाना चाहिए।

तो चलिए प्रयास करें, एक भारत-नेक भारत-श्रेष्ठ भारत बनाने की, अपने पास जो अच्छा विचार है, जो अच्छा व्यवहार है-उसका योगदान दें। इस योगदान से स्वयं 'मैं' के रूप में खुद का और इससे आगे परिवार-कार्यालय-परिवेश-देश सभी के कल्याण की बेहतरी होगी। यकीनन उसका लाभ स्वयं हमें भी प्राप्त होगा क्योंकि हम इन सबके साथ, इन सबके बीच और इन सबके माध्यम से ही जीते हैं। प्रतिस्पर्धा करें पर स्वस्थ शरीर और मन के साथ, क्योंकि अस्वस्थता मन की हो, शरीर की हो, दिमाग की हो, व्यवहार की हो हमेशा कमजोर ही करती है। सभी के जीवन का आने वाला हर-पल पिछले से बेहतर और खुशनुमा हो! इन शब्दों के साथ 'अक्षर' का नवीनतम अंक आपके सम्मुख है।

अभिवादन!

संपादक

रोशन पाण्डेय

उप प्रबंधक (राजभाषा)



## हिन्दी आजकल

नीलिमा पंडा

हिन्दी जुबां है, तहज़ीब है हमारे हिंदुस्तान की जिसमें भारतीय परंपरा की कहानी है, इतिहास है जिसमें हम अपने पुरखों, अपनी विरासत को जी पाते हैं। हम एक गणतंत्र भारत हैं। जिसके पास हिन्दी के रूप में एक ऐसी भाषा है जो किसी न किसी रूप में देश के हर भू-भाग से जुड़ी हुई है। जो विभिन्न भारतीय संस्कृति, वेशभूषा, बोली, व्यवहार के बावजूद राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी एकता, अखंडता का प्रतिनिधित्व करती हुई हम सभी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोती है। इसमें हमारा सामाजिक एकता और सौहार्द दिखाई देता है। बहरहाल दूसरे शब्दों में अगर यह कहें कि भारत के संविधान की उद्देशिका को हिन्दी चरितार्थ करती है तो गलत नहीं होगा। ऐसे में हिन्दी की स्थिति की समय-समय पर विवेचना की जाती रही है। इसमें कुछ स्थानों पर हिन्दी की हो रही उपेक्षा हिन्दी के लिए भले चिंता की बात हो या न हो, किन्तु हमारे लिए, हमारी अस्मिता के लिए हिन्दी की मौजूदगी के साथ हमारी गैर ज़िम्मेदारी अवश्य चिंतनीय है जो आजकल के रूप में परिलक्षित होती है।

विदित है कि मोटे तौर पर हिन्दी का विकास/उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं जिनकी एक दर्जन से ज्यादा बोलियाँ है। भारत का शायद ही कोई कोना हो जहाँ हिन्दी बोली या समझी न जाती हो अर्थात् हिन्दी का फैलाव पूरे देश में है और हिन्दी के माध्यम से हम देश के किसी भी कोने में विचार विनिमय कर सकते हैं। हिन्दी के पास अपना एक समृद्ध साहित्य है। इसमें कला, संस्कृति, आलोचना, काव्यशास्त्र के साथ साहित्य की समस्त विधाएँ जैसे कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि में श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। कुल मिलाकर हिन्दी अपने होने में ही पूर्ण व समृद्ध है। पर क्या प्रासंगिकता या वर्तमान स्थिति मायने नहीं रखती। निःसंदेह भाषा हर समय हर काल-खंड की होती है। हर समय की भाषाई जीवंतता ही उसे प्रासंगिक व समृद्ध बनाते हैं। फिर

हिन्दी आजकल कहाँ है और हमने हिन्दी को क्या स्थान दिया है यह दोनों ही प्रश्न विचारणीय हैं जिसके उत्तर हम सभी भारतवासी को निजी तौर पर देना चाहिए।

स्कूलों में हिन्दी महज एक विषय के रूप में शामिल है। शायद यह भी वैधानिक विवशताओं हेतु है अन्यथा हिन्दी की आवश्यकता नहीं समझी जाती। अधिकांश स्कूलों में हिन्दी बोलने पर पाबन्दियाँ हैं। आज देश के लिए इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि जिस भाषा को हम अपनी राष्ट्रीय भाषा की गरिमा देते हैं उसका हाल भी संस्कृत की तरह ही हो गया है। जिस तरफ देखो उस तरफ अंग्रेजी से हिन्दी और समस्त भारतीय भाषाओं को दबाया जा रहा है। चाहे आज देश में इंटरमीडिएट के बाद जितने भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम हैं सब अधिकांश अंग्रेजी में पढ़ाए जाते हैं। अगर देश की शिक्षा ही देश की राष्ट्रीय भाषा में नहीं है तो हिन्दी जिसे हम अपनी राष्ट्रीय भाषा मानते हैं, एक दूसरे का दुःख-दर्द बांटने की कड़ी मानते हैं, उसका प्रसार कैसे हो जाएगा? कैसे आनेवाली पीढ़ी हिन्दी को अपनाएगी? कैसे हिन्दी की पठनीयता बढ़ेगी? कैसे हिन्दी साहित्य का उद्देश्य सफल हो जाएगा?

कहा जाता है, हिन्दी बिना हिंदुस्तान अधूरा है। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में हिन्दी का अहम योगदान है। आज हिन्दी सिनेमा पूरे विश्व में एक अहम स्थान रखता है। बॉलीवुड की पहचान भी हिन्दी से ही है। हिन्दी की वजह से ही बॉलीवुड में हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। हिन्दी भाषा सिर्फ वार्तालाप और संचार का ही माध्यम नहीं है बल्कि हिन्दी सिनेमा से लेकर हिन्दी पत्र पत्रिकाओं और सोशल मीडिया पर हिन्दी का बोलबाला है जो कि देश में लाखों रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। आज इन्टरनेट पर भी करोड़ों लोग हिन्दी अनुसरण करते हैं इसलिए आज हिंदुस्तान में सोशल मीडिया भी अपना रूपान्तरण हिन्दी में कर चुका है और करोड़ों लोग फेसबुक तथा ट्विटर पर अपने

विचार हिन्दी में साझा करते हैं। आजकल विदेशी वेबसाइटें भी अपना हिन्दी संस्करण हिंदुस्तान में प्रारम्भ कर रही हैं क्योंकि उनको पता है कि हिंदुस्तान में अगर टिकना है तो हिन्दी को बढ़ावा देना ही होगा। महात्मा गांधी हिन्दी भाषी नहीं थे लेकिन वे जानते थे कि हिन्दी ही देश की संपर्क भाषा बनने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। उन्हीं की प्रेरणा से राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का गठन किया था। देश भर में हिन्दी पढ़ना गौरव की बात मानी जाती थी। महात्मा गांधी जी ने 1916 में क्रिश्चियन एसोसिएशन ऑफ मद्रास की एक सभा में स्पष्ट रूप से कहा कि धर्मांतरण राष्ट्रंतरण है।

सच तो यह है कि ज़्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मोहपाश में पूरी तरह से जकड़े हुए हैं। आज स्वाधीन भारत में अंग्रेजी में निजी पारिवारिक पत्र व्यवहार बढ़ता जा रहा है। काफी कुछ सरकारी व लगभग पूरा गैर सरकारी काम अंग्रेजी में ही होता है। ज़्यादातर नियम कानून या अन्य कार्यों में बातें, किताबें इत्यादि अंग्रेजी में ही होती हैं, उपकरणों या यंत्रों को प्रयोग करने की विधि अंग्रेजी में ही लिखी होती है भले ही उसका प्रयोग किसी अंग्रेजी के ज्ञान से वंचित व्यक्ति को करना हो। अंग्रेजी भारतीय मानसिकता पर पूरी तरह से हावी हो गई है। जबकि हिन्दी के नाम पर होने वाले कार्यक्रमों में विमर्श न होकर सिर्फ मनोरंजन और रस्म अदायगी की परिपाटी से आजकल हिंदी के गांभीर्य साहित्य विवेचना की संभावनाओं को चोट पहुंचाई जा रही है।

माना कि मैं अंग्रेजी या विश्व की दूसरी भाषाओं का ज्ञान जरूरी है। कई सारे देश अपनी युवा पीढ़ी को अंग्रेजी सीखा रहे हैं जिसमें एक भारत देश भी है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि उन देशों में वहाँ की राष्ट्र/स्थानीय भाषाओं को ताक पर रख दिया गया है और ऐसा भी नहीं है कि अंग्रेजी का ज्ञान हमें दुनिया के विकसित देशों की श्रेणी में ले आया है। सिवाय सूचना प्रौद्योगिकी के, हम किसी और क्षेत्र में आगे नहीं हैं। सारे विद्यार्थी प्रोग्रामर ही बनना चाहते हैं, किसी और क्षेत्र में कोई जाना ही नहीं चाहता है? क्या इसी को चौमुखी विकास कहते हैं? दुनिया के लगभग सारे मुख्य विकसित व विकासशील देशों में वहाँ का कार्य उनकी भाषाओं में ही होता है। यहाँ तक कि कई सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं के ज्ञान को महत्व देती हैं। आजकल हमारे देश में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल व्यापार की

तरह उग रहे हैं। बचपन में हम सुना करते थे कि सोवियत रूस में नियुक्त राजदूत विजयलक्ष्मी पंडित जो कि प्रधानमंत्री नेहरू की सगी बहन थी, ने रूस के राजा स्टॉलिन को अपना पहचान पत्र अंग्रेजी में भेजा। रूस के राजा स्टॉलिन ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया और पूछा कि क्या वहाँ की अपनी कोई भाषा है या नहीं? उन्होंने (राजदूत विजयलक्ष्मीपंडित) फिर हिन्दी में परिचय पत्र भेजा तब उन्होंने (राजा स्टॉलिन) मिलना स्वीकार किया।

अंग्रेजी लेकिन ज्ञान की भाषा नहीं है। सबसे अधिक ज्ञान विज्ञान तो संस्कृत में है जिसे भाषा का दर्जा दिया जाना महज औपचारिकता भर रह गया है। हमें हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना चाहिए। जैसे कि चीन अपनी भाषा को प्रोत्साहन दे रहा है। वैसे ही भारत देश को अपनी भाषा को प्रोत्साहन देना होगा और जितने भी देश में सरकारी कामकाज होते हैं वो सब हिन्दी में होना चाहिए और हिन्दी में उच्च स्तरीय शिक्षा के पाठ्यक्रम को क्रियान्वित करने की जरूरत है। सभी जानते हैं कि अंग्रेजी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। मैं अपने विचार में यह कहना चाहूँगी कि अंग्रेजी सभी को सीखना चाहिए लेकिन उसे अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने देना चाहिए। अगर अंग्रेजी हमारे ऊपर हावी हो गई है तो हम अपनी भाषा और संस्कृति सबको नष्ट कर देंगे। इसलिए आज से ही सभी को हिन्दी के लिए कोशिश जारी कर देनी चाहिए।

अगर हमने शुरूआत नहीं की, तो हमारी राजभाषा एक दिन संस्कृत की तरह प्रतीकात्मक हो जाएगी। जिसके जिम्मेदार और कोई नहीं हमलोग होंगे। अंग्रेजी भाषा की मानसिकता आज हम पर खासकर हमारी युवा पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में है। इसके लिए हमें प्रयास करने होंगे और जाहिर है हमें अंग्रेजी को अपने दिलो दिमाग पर राज करने से रोकना होगा, तभी हिन्दी आगे बढ़ेगी और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह घोषणा साकार होगी:

“हाय भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी  
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी”

मुख्य मेट्रॉन,

नालको अस्पताल, दामनजोड़ी



## सकल घरेलू उत्पाद के सुधार में स्वरोजगार का योगदान

अनुज कुमार

व्यक्तिगत एवं समाज के अंग के तौर पर हम सभी आजीविका के लिए कुछ न कुछ कार्य करते हैं। यह कार्य ही अपने आप में जीवन व्यतीत करने का साधन होता है और हमें समाज में भी स्थान दिलाता है। हर काम करने वाला व्यक्ति, अपने लिए आमदनी के साथ-साथ राष्ट्र की आमदनी में भी योगदान देता है। इसलिए उन्नत अर्थव्यवस्था में प्रत्येक कार्य करने वाले व्यक्ति का योगदान है। इससे पता चलता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए, अपने परिवार के लिए, समाज के लिए एवं राष्ट्र के लिए काम करता है।

किसी भी एक वर्ष के भीतर देश में उत्पादित होने वाले सभी सामानों और सेवाओं का कुल मूल्य सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के नाम से जाना जाता है। लोग विभिन्न तरह के कार्य करते हैं, कुछ लोग खेतों में, कुछ कारखानों में, कुछ बैंक में, कुछ दुकानों पर व कुछ लोग अपने घर पर ही काम करते हैं। घर से काम परम्परागत कार्य जैसे – सीके-पीरोने का काम, हथकरघा, हस्तशिल्प तक ही सीमित नहीं है, अपितु आधुनिक समय में यह कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, डाटा विश्लेषण जैसे कार्य पर भी पहुँच चुका है। पहले के समय में कारखाने से संबंधित कार्य केवल कारखाने में ही किए जाते थे, लेकिन आज के समय में कार्य को हिस्सों में विभाजित करके, लघु उद्योगों का रूप देकर घर से भी कार्य किया जा रहा है। कोरोना काल में लोग घर से कार्य करने पर विवश हुए, जिससे स्वरोजगार परक कार्यों का विकास हुआ।

जो व्यक्ति जीविकोपार्जन के कार्य का स्वयं स्वामित्व रखते हैं, अर्थात् अपने लिए ही काम करते हैं, उन्हें स्वनियोजित (सेल्फ एम्पलाइड) कहा जाता है। स्वनियोजित व्यक्ति का व्यवसाय छोटे स्तर का होने पर वह केवल स्वयं को नियोजित कर पाता है, लेकिन व्यवसाय बड़े स्तर का होने पर वह अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकता है। ऐसे व्यक्ति के व्यवसाय में कार्य करने वाले लोग नौकरी पेशा या दैनिक मजदूर कहलाते हैं।

भारत वर्ष में करीब 52% लोग के पास स्वरोजगार है। 25% लोग दैनिक मजदूरी करते हैं व करीब 23% लोग नौकरी पेशा है। अगर हम इन आकड़ों को शहरी व ग्रामीण स्तर पर विभाजित कर दें तो हम पाएँगे कि शहरी स्तर पर करीब

38% लोगों के पास स्वरोजगार है, पर ग्रामीण स्तर पर 58% लोगों के पास स्वरोजगार है। ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार का अधिक होने का कारण, बड़े रोजगार प्रदत्त साधनों का अभाव है। जिसके कारण स्वतः ही खेती, दर्जी का काम, बढ़ईगिरी एवं हस्तशिल्प जैसे कामों में लग जाते हैं। लेकिन इन सभी छोटे रोजगारों के साथ मौसमी बेरोजगारी, चक्रीय बेरोजगारी, अर्ध बेरोजगारी जैसी समस्याएँ भी व्याप्त हैं। इन सभी का अर्थ संक्षेप में इस तरह से समझा जा सकता है कि इन व्यक्तियों का काम मौसम में होने वाले परिवर्तन, व्यापार चक्र में प्रतिसार की अवस्था, अपनी क्षमता व योग्यता के अनुरूप कार्य न पाने की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। जिसके कारण ये लोग निजी आमदनी व राष्ट्र की आमदनी में पूर्णरूप से योगदान नहीं कर पाते हैं। इस कारण के मूल हेतु यदि हम अध्ययन करें तो देखेंगे कि स्वनियोजित लोग पिछले 50 वर्ष में लगभग 61% से घटकर 52% हो गए हैं, पर नौकरीपेशा लोग 15.4% से बढ़कर लगभग 23% हो गए हैं।

स्वरोजगार की इन्हीं कमियों को दूर करके सकल घरेलू उत्पाद को गति देने के लिए सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व प्रत्यक्ष सरकारी माध्यमों से निम्न संस्थानों/ मंत्रालयों की स्थापना की है।

- I. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई.टी.आई.)
- II. कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय
- III. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम
- IV. ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

इन सभी का उद्देश्य अकुशल कर्मी व अर्धकुशल कर्मी को कुशल कर्मी में परिवर्तित करना है। इसके साथ-साथ इन का उद्देश्य स्वरोजगार परक व्यवसाय का प्रशिक्षण देना है, इसके साथ-साथ सरकार स्वरोजगार के लिए सस्ती दरों पर ऋण उपलब्ध कराती है। ये सभी कार्य सरकार के स्वरोजगार के सकल घरेलू उत्पाद में महत्व को समझ कर ही किए गए हैं। इस स्वरोजगार परक शिक्षा के कारण अधिक से अधिक लघु उद्योग स्थापित होंगे व रोजगार में वृद्धि होगी, जिससे सभी लोगों के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था का समुचित विकास हो पाएगा।

सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)  
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



# भारत के आर्थिक विकास में एल्यूमिनियम उद्योग और नालको की भूमिका

विवेक कुमार साहू

भारत के आर्थिक विकास में एल्यूमिनियम उद्योग के योगदान में वृद्धि जारी रखने के लिए हाल ही में व्ही.के.सारस्वत (नीति आयोग के सदस्य) की एक रिपोर्ट ने सिफारिश की है कि सरकार को एल्यूमिनियम क्षेत्र को भारत के नौवें प्रमुख उद्योग के रूप में वर्गीकृत करने पर विचार करना चाहिए।

वर्तमान में आठ प्रमुख उद्योग हैं। कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफायनरी उत्पाद, उर्वरक, स्टील, सीमेंट और बिजली। वर्तमान में एल्यूमिनियम उद्योग दूसरा सबसे महत्वपूर्ण धातुकर्म उद्योग है। विनिर्माण सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 2 प्रतिशत को योगदान देता है। अधिकांश एल्यूमिनियम संयंत्र आम तौर पर देश के भीतरी इलाकों में स्थित हैं और रोजगार पैदा करने और क्षेत्र के आर्थिक विकास में सहायता करते हैं। यह एक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार गुणक जो लगभग 800,000 रोजगार सृजित करता है। एल्यूमिनियम ने कई उद्योगों में स्टील, तांबा, जस्ता और लीड के विकल्प के रूप में लोकप्रियता हासिल की है क्योंकि यह हल्की धातु है, जंग के लिए प्रतिरोधी, उष्मा का एक अच्छा संवाहक, सस्ता और अन्य धातुओं के साथ मिश्रित होने पर मजबूत हो जाता है।

पहली बार भारत में एल्यूमिनियम के निर्माण का प्रयास 1937 में एल्यूमिनियम कार्पोरेशन ऑफ़ इंडिया के गठन के समय शुरू किया गया था। लेकिन एल्यूमिनियम का उत्पाद करने वाले इसके पहले उद्यम में देरी हुई। इस बीच, भारतीय एल्यूमिनियम कंपनी ने केरल में एल्यूमिनियम में अपना उत्पादन शुरू किया। वर्तमान में भारत बॉक्साइट भंडारण के मामले में विश्व में चौथे स्थान पर आता है। एल्यूमिनियम उत्पादन के लिए बॉक्साइट मूल कच्चा माल है। सबसे बड़ा उत्पादन आस्ट्रेलिया, उसके बाद चीन, फिर ब्राजील और भारत में होता है। एल्यूमिना में उत्पादन और रूपांतरण लागत में भारत का उचित लाभ है। इसकी सामरिक स्थिति

एवं रणनीतिक स्थिति निर्यात के अवसरों को विकसित करने के साथ-साथ तेजी से एशियाई बाजारों को सक्षम बना रही है। भारत के आर्थिक विकास में एल्यूमिनियम उद्योगों के बढ़ते योगदान को जारी रखने के लिए एशिया में एल्यूमिनियम के सबसे बड़े एकीकृत प्राथमिक उत्पादन में से एक के रूप में नालको की उपस्थिति है।

नालको की उपस्थिति में बॉक्साइट खनन, एल्यूमिना रिफाइनरी, एल्यूमिनियम गलाना, बिजली उत्पादन से लेकर डाउनस्ट्रीम तक संपूर्ण मूल्य श्रृंखला शामिल है। नालको ने अपनी विरासत को जारी रखते हुए असाधारण योगदान दिया है, जो कि निम्नलिखित है।

1. विश्व में एल्यूमिना का सबसे कम लागत वाला उत्पादक।
2. विश्व में बॉक्साइट का सबसे कम लागत वाला उत्पादक।
3. देश में दूसरा सबसे अधिक शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करने वाला केंद्रीय लोक उद्यम।
4. वित्त वर्ष 2020-21 में स्थापना के बाद से अब तक का सबसे अधिक बॉक्साइट उत्पादन।
5. जीईएम पोर्टल के माध्यम से 2019-20 में 8.42 करोड़ के मुकाबले 2020-21 में 343.19 करोड़ रूपए हासिल किया।
6. एमएसई से 25% के अनिवार्य खरीद लक्ष्य के मुकाबले, नालको ने वित्त वर्ष 2020-21 में कुल खरीद का 30.42% हासिल किया।
7. 100% से अधिक एल्यूमिनियम उत्पादन का लक्ष्य हासिल किया।

राज्य की प्रसिद्ध विरासत, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने

के लिए कंपनी के प्रयासों को विशेष रूप से सराहा गया। देश में कई गुना बढ़ने के लिए तैयार जन शक्ति की मांग के साथ, कंपनी विभिन्न मांग क्षेत्रों जैसे खुदरा, स्वास्थ्य सेवा, सिलाई मशीन ऑपरेटर आदि में प्रशिक्षण भागीदारों के साथ हाथ से हाथ मिलाकर बेरोजगार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है।

इस प्रयास के साथ ही साथ, नालको ने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में निम्न योगदान दिए हैं-

- पीएम केयर फंड में 7.6 करोड़ रूपए का योगदान दिया गया।
- मुख्यमंत्री राहत कोष, ओडिशा में 2.6 करोड़ रूपए का योगदान किया गया।
- कोल्ड चैन इन्फ्रस्ट्रक्चर (सीसीई) और लॉजिस्टिक इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए, एक रेफ्रिजरेटेड ट्रक खरीदा गया और कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम के लिए राज्य प्रतिरक्षण प्रकोष्ठ को सौंपा गया। रेफ्रिजरेटेड ट्रक में 25,70,000 कोविड वैक्सीन (खुराक में) ले जाने की क्षमता है।
- ओडिशा सरकार के साथ मिलकर कंपनी ने अनुगुळ जिले के ईएसआई अस्पताल, बनारपाल में एक जिला कोविड स्वास्थ्य केंद्र (डीसीएचसी) स्थापित किया है।
- कोविड-19 महामारी के दौरान सभी की स्वच्छता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, नालको अपने परिचालन क्षेत्र, संयंत्रों, कार्यालयों और टाउनशिप के आसपास के गांवों में भी नियमित अंतराल पर व्यापक स्वच्छता अभियान चला रहा है।
- अनुगुळ जिले के बनारपाल के ईएसआई अस्पताल में 150 बिस्तरों वाला जिला कोविड अस्पताल का वित्त पोषण।
- कोरापुट के जरूरतमंद जिले में 70 बिस्तरों वाले एसएलएनएम कॉलेज और अस्पताल के लिए वित्तीय सहायता।

### निष्कर्ष-

मनुष्य की आधुनिक आर्थिक गतिविधियों में उद्योग

अत्यधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी देश का आर्थिक विकास मुख्य रूप से उस देश के औद्योगिक विकास से ही तय होता है। भारत के विकास (आर्थिक) में एल्यूमिनियम उद्योग ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कारण यह भी एक है कि, एक ऐसा देश जहाँ कि अनुमानित 37% आबादी गरीबी रेखा के नीचे हैं, उनके लिए एल्यूमिनियम एक प्रमुख उपयोग की जाने वाली धातु है; और फिर भारत सरकार की कई अन्य महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिए भी एल्यूमिनियम एक प्रमुख उपयुक्त होने वाली धातु है। ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि जीडीपी के अनुमानित उच्चतम वृद्धि के कारण आने वाले कुछ वर्षों में एल्यूमिनियम की मांग वृद्धि बहुत अधिक बढ़ने वाली है। हालाँकि जीडीपी की अनुमानित वृद्धि कोविड महामारी के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है। भारत सरकार के बहु आयामी पहल जैसे मेक इन इंडिया, 100% ग्रामीण विद्युतीकरण, सभी के लिए घर, स्मार्ट सीटी, 100 लाख करोड़ की राष्ट्रीय पाइपलाइन अवसंरचना, नवीकरणीय उर्जा एवं एफएएमई (फास्टर एडोप्शन ऑफ़ मनुफैक्चरिंग ऑफ़ हाइब्रीड एंड ईवी) इलेक्ट्रीक वाहन योजना, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आदि द्वारा देश में धातु के खपत को बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। ऐसे में कोई संदेह नहीं कि, भारत के विकास (आर्थिक) में एल्यूमिनियम धातु और उद्योग दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। साथ ही उत्पादक के रूप में नालको ने भारतीय बाजारों के साथ ही साथ विश्व बाजार की जरूरत को पूरा करते हुए, लाभ-प्रदता के साथ देश को आर्थिक रूप से मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विदेशी मुद्रा अर्जित करते हुए, नालको का यह योगदान और भी अधिक बढ़ जाता है।

दूसरी तरफ स्थापना के साथ ही कंपनी ने समाज के लिए गहरी सहानुभूति-समानुभूति का प्रदर्शन किया है। इस राह के साथ आगे बढ़ते हुए कंपनी ने अपने हितधारकों के लाभ को भी बढ़ाते रहने में कोई कसर नहीं रहने दी है। हितधारकों के धन को बढ़ाना कंपनी के विकास को गति देने के लिए प्रमुख प्रेरक होता है। इस रूप में कंपनी लाभ के साथ लोगों के चेहरे को मुस्कान से भरते हुए अपनी तरक्की, देशवासियों के हित और देश की समृद्धि के लिए लगातार प्रयासरत है।

स्नातक अभियांत्रिक प्रशिक्षु (यांत्रिक)  
एल्यूमिना परिशोधक  
दामनजोड़ी





# स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

चिरंतन श्याम

भारत विविधताओं का राष्ट्र है। यहाँ विभिन्न धर्म, जाति, संप्रदाय के लोग रहते हैं। सदियों से अनेकता में एकता हमारी अनमोल विशेषता बनी रही है। प्राचीन काल में भारत को "सोने की चिड़िया" कहा जाता था। हमारा भारत शिक्षा, ज्ञान, व्यवसाय, कृषि इत्यादि में अग्रणी था। लोग सत्यनिष्ठ थे। इसलिए हर तरफ भारत की जय और हर क्षेत्र में भारत की विजय होती थी। मुण्डोपनिषद में सत्य की महानता को बताया गया है- "सत्यमेव जयते", अर्थात् सत्य की जीत होती है। यही हमारा राष्ट्रीय वाक्य है।

आजादी के 75वें वर्ष का अमृत महोत्सव चल रहा है। विदेशों से भारत के बदलते संबंधों एवं बदली वैश्विक परिस्थिति को ध्यान में रखकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 12 मई 2020 को "आत्मनिर्भर भारत मिशन" का आह्वान किया था। देश को आत्मनिर्भर बनाने हेतु वोकल फॉर लोकल (vocal for local), लोकल फॉर ग्लोबल (Local for Global), मेक इन इंडिया फॉर वर्ल्ड (Make in India for world) इत्यादि की बात बताकर मार्गदर्शन किया।

आजादी के 75 वर्ष: चुनौतियां और संघर्ष-

आजादी के इन 75 वर्षों में हमने निम्नलिखित चुनौतियों और संघर्षों का सामना किया है:-

**(क) चुनौतियां** - पूँजीपतियों के हाथ में था। जो गरीब जनता के बारे में नहीं सोचते थे।

- (i) अंग्रेजों की 200 वर्षों की गुलामी में हमने काम रोकना, प्रदर्शन, हड़ताल, आन्दोलन करना सीखा।
- (ii) देश में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी प्रबल थी। लोगों में भविष्य को लेकर असंतोष और अनिश्चितता थी।
- (iii) तकनीक और उद्योग पूँजीपतियों के हाथ में था। जो गरीब जनता को बारे में नहीं सोचते थे।

(iv) देश वर्षों की रूढ़िवादी सोच एवं जातीय, सांप्रदायिक, धार्मिक, प्रांतीय, असमानताओं से घिरा था। जगह-जगह दंगे हो रहे थे।

**(ख) संघर्ष**

आजादी के 75 वर्षों में देश के आत्मनिर्भर बनाने हेतु स्कूल, कॉलेज, चिकित्सालय, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र बनाए गए हैं। कई सरकारी एवं गैर-सरकारी उद्योग स्थापित करके रोजगार के अवसर उत्पन्न किये। कृषि के लिए उन्नत बीज एवं तकनीकी स्थापित की। सड़कें, राजमार्ग इत्यादि का निर्माण किया ताकि लोगों का जीवन यापन और आवागमन सरल हो। हमने देश को विकसित बनाने के लिए समस्त संघर्ष किये हैं किंतु अब हमें आत्मनिर्भरता पर मुख्य ध्यान देना होगा।

**भारत को आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता** : वैसे तो आत्मनिर्भर होना किसी भी देश का सपना होता है। पर भारत के लिए मुख्य आवश्यकता है। जिसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं -

**(क) भारत का पड़ोसी देशों से कड़वे संबंध:**

भारत के अपने दो पड़ोसी पाकिस्तान एवं चीन से कई वर्षों से कड़वे संबंध हैं। बदले में वह हमसे "गलवान घाटी और अरुणाचल प्रदेश" में खूनी संघर्ष एवं जमीं कब्ज़ा करता है। चीन के साथ वर्तमान की व्यावसायिक आवश्यकता में प्राप्त होने वाली वस्तुओं को हमें उच्च गुणवत्ता में बनाकर चीन पर निर्भरता को समाप्त करना है।

ऐसे ही विश्व के कई देशों के आपसी मैत्रिक संबंध कूटनीतिक आधार पर बदलते एवं बनते रहते हैं। इन परिस्थितियों के बीच आत्मनिर्भर होकर हम देश को और भी मजबूत बना सकते हैं। परिस्थितियों के अनुकूलन की संभावना इससे बढ़ सकती है।

## (ख) विश्व के मानचित्र पर सक्षम राष्ट्र बनना:

राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार प्रत्येक देश को दूसरे देश से आयात करना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति से भारत को भी राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुसार विभिन्न संसाधनों का आयात करने की आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता के उद्देश्य से वोकल फॉर लोकल का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस प्रयास से ऐसा मुमकिन है कि, हम अपने देश की आवश्यकता को अपने देश के ही संसाधनों से पूरा करने का प्रयास करें और इससे विदेशी कर्ज के बोझ से भी बचा जा सकता है। ऐसा करते हुए अन्य राष्ट्रों के लिए हम प्रेरणा का माध्यम बनकर भी विकसित होंगे और साथ ही साथ “भारत अपने पुराने गौरव-सोने की चिड़िया होने” का भी स्थान पुनः प्राप्त कर सकेगा।

## आत्मनिर्भर बनने हेतु आवश्यक कदम:

देश में भूमि, खनिज, जल, विद्युत, कोयला एवं मानव संसाधन की कोई कमी नहीं है। तब भी हम देश के आवश्यकता की कितनी ही वस्तुओं का विदेशों से आयात कर रहे हैं। अतः हमें ऐसा प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे कि हम अपने देश में उपलब्ध कच्चे सामान/संसाधन का ही प्रयोग करके उच्च गुणवत्ता की वस्तुओं का देश में ही निर्माण करें। इस प्रयास से देश में रोजगार की वृद्धि तो होगी ही साथ ही साथ निर्मित वस्तुओं के निर्यात से हम विदेशी मुद्रा अर्जित करने का भी प्रयास कर सकते हैं। इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्राप्त होगी। आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भर भारत की जान है। उत्पादों को सरलता से हर भाग में पहुँचाया तथा इससे निर्यात को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था को सशक्त किया जा सकता है।

## आत्मनिर्भर प्रशासन और तंत्र:

देश की आंतरिक व्यवस्था के शांति पूर्ण रहने से व्यवसाय, प्रशासन और आम-जनजीवन को बेहतरीन परिवेश प्राप्त होता है। देश की स्वस्थ और सौहार्द पूर्ण आंतरिक व्यवस्था देश की उन्नति और तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विशेष रूप से तो यह जिम्मेदारी स्थानीय प्रशासन और केंद्र सरकार की होती है, तथापि सामूहिक रूप से देश का खयाल सभी देशवासियों को मिलकर ही रखना होता है। ऐसे परिवेश से देश में भीतरी के साथ ही साथ बाहरी लोगों के लिए भी व्यवसाय के अवसर उपलब्ध होते हैं, निवेश के अवसर बढ़ते हैं और अधिक से अधिक रोजगार का सृजन

होता है। लोग और कंपनियाँ हमारे देश की ओर आकृष्ट होती हैं।

इस प्रयास के साथ बाहरी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार ने एकल खिड़की की सुविधा का आरंभ किया है। जहाँ व्यवसाय करने के लिए सार प्रमाण-पत्र, अनुज्ञापत्र और अनुमतियाँ आम परिचालन के अंतर्गत भ्रष्टाचार मुक्त तरीके से आवेदन और प्राप्त की जा सकती हैं। लोगों के सत्यनिष्ठा के कारण कई स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर के रोजगार का भी आरंभ हुआ है।

## आधारभूत संरचना के द्वारा आत्मनिर्भरता:

किसी देश का भविष्य उसकी आधारभूत संरचना पर भी निर्भर होता है। यदि हमें आत्मनिर्भर बनना है तो अपनी आधारभूत संरचना को मजबूत करना होगा।

देश में विश्व-स्तरीय शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण संस्थान की संख्या में वृद्धि करनी होगी। ताकि कोई व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेश की ओर आश्रित न रहे। देश में ही जाँच व अनुसंधान के विश्व स्तरीय संस्थान का निर्माण करना होगा, इससे देश को बल और नागरिकों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा। बेहतरीन चिकित्सा संस्थान हमें किसी भी महामारी की स्थिति में अपने ही देश में औषधि प्राप्त करने में सक्षम बनायेंगे। इस सभी के साथ यह बहुत ही आवश्यक है कि, देश की मजबूती के लिए प्रत्येक वर्ग, धर्म, जाति, समाज और समुदाय के स्तर को हटाकर देश की भावना से देश के लिए देश के स्तर पर भी विचार और कार्य किया जाए।

## सुदृढ़ और आकर्षक लोकतंत्र:

आकर्षण के लिए बाहरी के साथ ही साथ देश की भीतरी खूबसूरती भी आवश्यक है। बाहरी के लिए देश का कूटनीतिक तौर पर मजबूत होना और भीतरी के लिए शिक्षण, व्यवसाय, उद्योग, चिकित्सा, पर्यटन इत्यादि के स्तर पर श्रेष्ठता आवश्यक है। ताकि विदेशी लोगों और कंपनियों के लिए भारत सदैव आकर्षण का केंद्र बना रहे। इससे देश की अर्थव्यवस्था सशक्त होगी।

## आत्मनिर्भरता के लिए सत्यनिष्ठा की आवश्यकता:

सत्यनिष्ठा के बिना आत्मनिर्भरता की कल्पना रेत के किले बनाने के समान ही है। सत्यनिष्ठा किसी भी व्यक्ति या देश के लिए रीढ़ की हड्डी है। इसलिए प्रयास यह भी किया जाना चाहिए कि देश में किसी भी प्रकार की असमानता को किसी

भी स्तर या रूप में बढ़ावा न दिया जाए। आर्थिक, धार्मिक, जातीय, प्रांतीय असमानता या भेदभाव देश के विकास एवं आत्मनिर्भरता के लिए रूकावट है। हमें इस असमानताओं को भूलकर सभी लोगों के लिए सत्यनिष्ठा से कार्य करना होगा। तभी सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

भ्रष्टाचार से मुक्ति भी इसी का एक स्वरूप है। यह एक ऐसा दीमक है जो किसी भी विकास एवं समृद्धि को भीतर ही भीतर नष्ट कर देता है। अतएव जरूरी है कि, प्रत्येक स्तर व स्वरूप में इसे दूर कर देश को आत्मनिर्भर बनने की राह पर आगे बढ़ाया जाए।

### सत्यनिष्ठा से बने आत्मनिर्भर भारत की उपलब्धियाँ:

इस प्रयास के अंतर्गत हमारे देश के प्रत्येक स्तर की उपलब्धि को शामिल किया जा सकता है। तथापि, इसके अंतर्गत रेखांकित किये जाने के उद्देश्य से चर्चा की जाए तो, हम जानते हैं कि आजादी के बाद भारत अपने उपग्रह को विदेशी धरती से प्रक्षेपित करने के लिए बाध्य था। तथापि भारत के वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों के अथक प्रयास से ही यह मुमकिन हुआ कि आज भारत अंतरिक्ष और विज्ञान के क्षेत्र में सत्यनिष्ठा से देश का परचम बुलंद कर रहा है। आज भारत अपने ही नहीं वरन कई दूसरे देशों के उपग्रह भी अपने ही देश से प्रक्षेपित कर रहा है। इस क्रम में मंगलयान और चन्द्रयान हमारी आत्मनिर्भरता का अनूठा उदाहरण है।

इसी प्रयास के अंतर्गत कोरोना महामारी के कारण जब पूरा

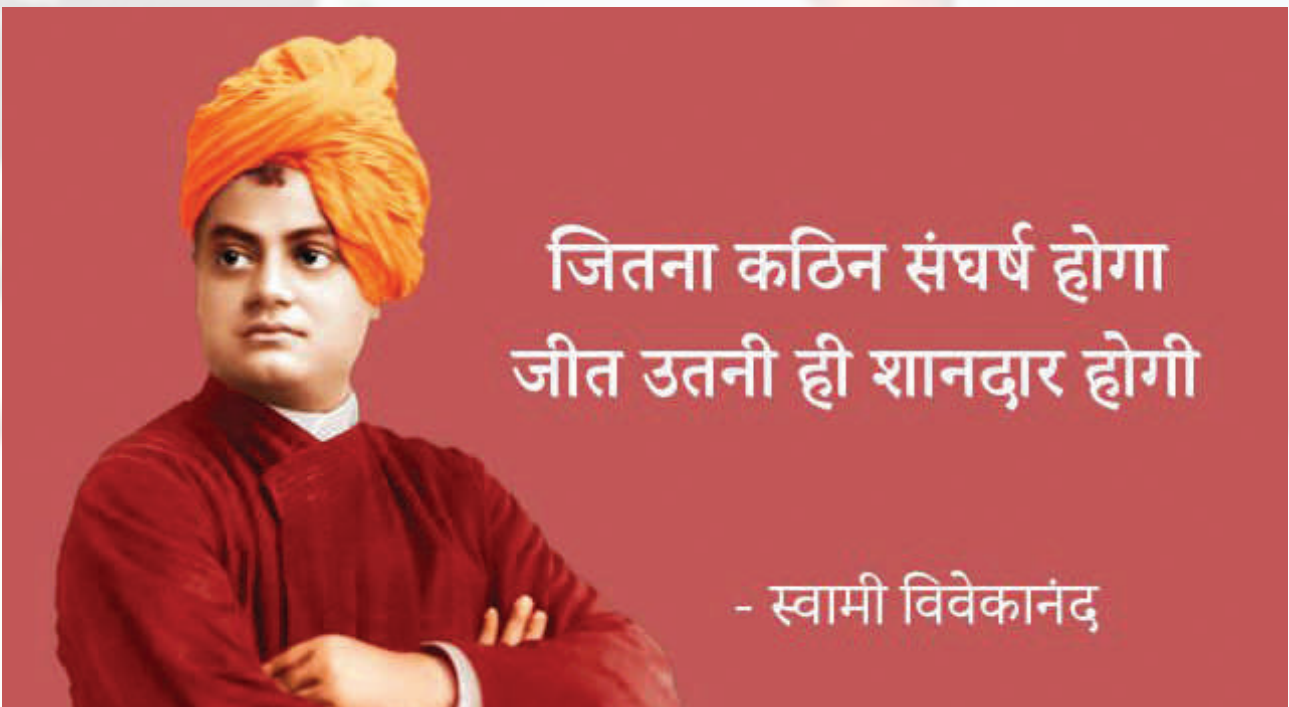
देश मुश्किल समय से गुजर रहा था। तब हमने अपनी "हाईड्रोक्सी क्लोरोक्वीन" दवा पूरे विश्व को प्रदान कर, मानवता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। कोवैक्सीन दवा बनाकर महामारी में देश को आत्मनिर्भर बनाया। आज सेना के लिए भी कितने ही सामानों का स्वदेशी निर्माण हमारे आत्मनिर्भरता की ओर ही बढ़ रहा कदम है।

नतीजतन यह स्पष्ट है कि, आत्मनिर्भरता की ओर भारत उन्मुख है। प्रत्येक माता पिता अपनी संतान को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करते हैं। वह सत्यनिष्ठा से शिक्षा प्रदान कर उसे भविष्य के लिए मेहनत करने की सलाह देते हैं। ताकि उसकी आत्मनिर्भरता सदैव कायम रहे। इस मार्ग के बारे में कबीर दास ने लिखा है-

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।  
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप!!"

आत्मनिर्भरता का स्वप्न हमारे देश के प्रत्येक देशवासी का स्वप्न है, यही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का स्वप्न था, यही हमारे देश के प्रत्येक स्वतंत्रता सेनानी का भी स्वप्न रहा था। अतः हमें सत्यनिष्ठा के साथ आगे बढ़ते हुए, भ्रष्टाचार को और असमानताओं को मिटाना होगा। ईमानदारी से सबको सुविधा एवं अवसर प्रदान करना होगा, ताकि देश का चतुर्दिक विकास हो। देश प्रगतिशीलता के साथ आगे बढ़ता रहे।

वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)  
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुळ





## कोरोना

कुँवर सिंह कोड़ाह

चीन से उपजा कोरोना पूरी दुनिया में दस्तक तो पहले ही दे चुका था। पहली लहर में कोहराम मचाया और अब दूसरी लहर में आफत और त्रासदी के रूप के बाद आज ओमिक्रोन के रूप में कोरोना फिर दस्तक दे चुका है। विश्व के अन्य देश प्रभावित हैं और वे एहतियातन कदम भी उठाने लगे हैं। भारत भी कोरोना के इस स्वरूप से अछूता नहीं है। भारत में ओमिक्रोन की संख्या लगातार बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने तो यह वायरस तेजी से पसरता जा रहा है। ऐसे में कोरोना का संकट टला तो कभी नहीं था किन्तु मामलों में कमी से थोड़ी राहत अवश्य थी और कुछ हद तक है भी।

अब तक इसने काल का रूप लेकर हजारों लोगों को लीला है। क्या छोटा, क्या बड़ा हर देश इसके कारण कठिन दौर से गुजरा। इस वायरस की भयावहता इसी बात से लगायी जा सकती है कि यह वायरस लगातार फैल रहा है। इसके इतने रूप हैं जिसे पता लगाना वैज्ञानिकों के लिए भी एक चुनौती ही रही है। यह एक अदृश्य दुश्मन पहले ही कहा जा चुका है जो कब और कैसे और कितना गहरा प्रहार करेगा, किसी को नहीं मालूम। अमेरिका, इटली जैसे विकसित राष्ट्र भी इसे पूरी तरह से नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। कोरोना के व्यापक दुष्परिणाम देखने को मिल रहे हैं। सभी देश बार-बार लॉकडाउन लगाने की वजह से भारी आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं। हर ओर जीवन को बचाने की मुहिम हर स्तर पर चल रही है।

विदित है कि कोरोना की पहली लहर में विश्व के किसी भी देश के पास कोरोना की टीका (वैक्सीन) व दवाई उपलब्ध नहीं थी। भारत जैसे विशाल और विकासशील देश ने अपने कुशल प्रशासकीय प्रबंधन और कोरोना नियमों का कठोरता से पालन सुनिश्चित करते हुए विश्व के समक्ष कोरोना नियंत्रण की नज़ीर पेश की। जिसकी विश्व में खूब सराहना की गई। इतने बड़े देश में ऐसा होना आसान कतई आसान नहीं था,

पर ऐसा हुआ और सबने देखा भी। ध्यान देने की बात यह है कि पहली लहर में कोरोना को तब नियंत्रित करना संभव किया जा सका जब कोरोना अभी दस्तक दिया ही था और धीरे-धीरे अपना पाँव पसार रहा था। हम इस महामारी को लेकर कहीं न कहीं गंभीर थे। सरकार ने निर्देश जारी किए। अपने सभी माध्यमों से जागरूकता फैलाई, प्रशासन को कोरोना नियमों का सख्ती से पालन करने के लिए आदेश दिया। पर क्या वास्तव में इतना ही सच है अथवा अधूरा सच। उन दिनों पर रोशनी डालने पर अहसास होता है कि हम अनुशासित थे- शायद स्वयं में सबसे ज्यादा।

यद्यपि कोरोना की दूसरी लहर में तो विश्व के कुछ देशों के लगभग साथ-साथ भारत में भी स्वदेशी टीका आ गया था। फिर भी दूसरी लहर ने भारत को त्रासदी में क्यों धकेल दिया? शायद इसलिए कि हमने इस महामारी के प्रति अपनी गंभीरता ही खत्म कर दी। अति विश्वास कहें या अपनी लापरवाही, हमें यह स्वीकारना होगा कि हमसे चूक हुई जिसके कारण हमने कोरोना नियमों का पालन करने में कोताही बरती। इसका खामियाजा देश को हजारों लोगों की जान और भारी आर्थिक संकट से भुगतना पड़ा। हम भूत से सीखने और वर्तमान में जीने की प्रेरणा से आगे बढ़ें तो अब हमारे पास दोनों कोरोना लहरों का अपार अनुभव है। इस सीख और संकल्प के साथ कि हम स्वयं के साथ अपने परिवार और चिर-परिचित सभी को कोरोना से पुनः आगाह कराएंगे। साथ ही, कोरोना नियमों – दो गज की सामाजिक दूरी अपनाएँ। मास्क को भी ढंग से पहने। बार-बार हाथ धोएं। भीड़-भाड़ वाले स्थान पर जाने से बचें। सरकार के द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों का सख्ती से अनुपालन करें, तो इससे तीसरी लहर की आशंका को बहुत हद तक दूर किया जा सकता है।

भारत में आज विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चल

रहा है। लक्ष्य के अनुरूप हर आयु वर्ग का टीकीकरण भी किया गया। सभी लोग इस अभियान में सहयोग करें। अपने साथ दूसरों को भी टीका लगवाएँ। अपनी रचनात्मकता से सभी देशवासियों को जागरूक बनाएँ। संतुलित भोजन करें। नियमित योग करें। अपनी रूचि के अनुरूप अपनी सृजनशीलता बढ़ाएँ। यह भी प्रकाश में आया है कि बार-बार लॉकडाउन से लोग एकरसता और इससे उपजी मनोरोग के शिकार हो रहे हैं। यह स्थिति अच्छी नहीं है। स्वयं को स्वस्थ एवं प्रसन्न रखना हमारा कर्तव्य भी है और धर्म भी। अपने कार्य को गति देते रहना और अपने परिवार को हर रूप में सुरक्षा प्रदान करना हमारी ज़िम्मेदारी है। ऐसे में हमें इन भौतिक समस्याओं से भी सामना करना है। निश्चित रूप से सरकार के लिए लॉकडाउन का निर्णय लेना आसान नहीं पर वह लोगों के जीवन की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहती; इसलिए इससे होने वाले आर्थिक संकट को भी सहने के लिए विवश है। कई छोटे उद्योग प्रभावित हुए हैं तो बड़ी संख्या में रोज कमाने और रोज खाने वाले वर्ग का कार्य बंद हो जाने से नाना प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उनके सामने रोजी-रोटी के साथ छत की भी समस्या सामने आ रही है। वहीं दूसरी तरफ सरकार के समक्ष एक आर्थिक संकट मुँह बाए खड़ी है जिससे पार पाना निश्चित रूप से सहज नहीं है। सरकार की तरफ से इससे निपटने के लिए हर संभव कोशिश की जा रही है। ऐसे में हम सरकार का सहयोग करेंगे तो निश्चय ही देश के लिए एक बड़ी राहत होगी। प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से आर्थिक संकट से

गुजर रहे लोगों को राहत मिलेगी।

वास्तव में देखा जाए तो हमारा देश हमारे लिए वह सब कुछ करता है जो हमारे सम्मानजनक जीवन जीने के लिए आवश्यक होता है। ऐसे में सीधे तौर पर अगर देश को हमसे कुछ अपेक्षा है तो हमें भी देश की उम्मीदों पर खरा उतरने की आवश्यकता है। दरअसल देश की अपेक्षा भी हमारे सुरक्षित जीवन के लिए ही है। कोरोना के विरुद्ध लड़ाई हम सबकी भागीदारी से ही संभव है। और यह भी वह लड़ाई जो हम स्वयं और अपनों के जीवन के लिए कर रहे हैं। ऐसे में सरकार के निदेशानुसार अपने को कुछ दिनों के लिए घर में रखना, बार बार हाथ धोना, किसी से भी संपर्क में न आना, स्वच्छता का पूरा खयाल रखना, कोई भी स्वास्थ्य संबंधी असुविधा होने पर चिकित्सक से परामर्श लेना, देशहित में है। कोरोना समूचे मानवजाति के लिए खतरा है। यह जीवन में एक ऐसा दौर है जब हम मायूसी छोड़ एक दूसरे की मदद कर सकते हैं। अपनी देश-भक्ति दिखाने का इससे बेहतर और इससे सहज, सरल कार्य शायद ही कोई दूसरा हो। जिसमें हमें सिर्फ कोरोना नियमों का पालन करते हुए सरकार के निर्देशों के प्रति गंभीर रहना है। कोरोना से हर हाल में खुद को बचाना ही कोरोना के उन्मूलन की ओर बढ़ना है। आइए जीतें ताकि देश, मानव-जाति की जीत तय हो सके।

कनिष्ठ अधिकारी (सचिवीय)  
खान एवं परिशोधन संकुल  
दामनजोड़ी

**सम्भव की सीमा जानने का  
केवल एक ही तरीका है।  
असम्भव से भी  
आगे निकल जाना।**



# कार्यक्रम की झलकियाँ



“हिंदी दिवस” के अवसर पर कंपनी की पत्रिका 'अक्षर' का विमोचन करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय श्री श्रीधर पात्र एवं वरिष्ठ अधिकारी गण



खान व परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी में “हिंदी दिवस” कार्यक्रम में शपथ ग्रहण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री रवि शंकर दास एवं कार्यक्रम की अन्य झलकियाँ



प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ में माननीय प्रधानमंत्री जी के विचारों का प्रदर्शन तथा “हिंदी दिवस” कार्यक्रम के विजेता को पुरस्कृत करते हुए वरिष्ठ अधिकारी गण



क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र (नई-दिल्ली) में राजभाषा प्रतिज्ञा लेते हुए वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी



पत्तन सुविधाएँ, विशाखपट्टणम कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का दृश्य



क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिणी क्षेत्र (चेन्नई) में विजेता एवं प्रतिभागी कर्मचारियों के साथ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री राजेश कपूर



## समग्र प्रदर्शन हेतु सम्मिलित प्रयास

प्रबीण कुमार सामल

“व्यक्तिगत रूप से हम एक बूँद हैं और साथ में हम एक महासागर हैं।” - श्योनोसुके सटोरो

टीम वर्क किसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक समूह का सकल प्रयास है। यह सफलता की कुँजी है, जिससे एक समूह के लोग एक समान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

टीम वर्क सिर्फ खेल में ही नहीं बल्कि परिवार, कंपनी, कृषि क्षेत्र एवं जानवरों में भी देखा जा सकता है। हमने टीम वर्क से जुड़ी कई कहानियाँ भी सुनी हैं- “किस तरह कबूतर जाल के साथ उड़ गए एवं पक्षी पकड़ने वाला चकित रह गया।” टीमवर्क के लाभ –

“भूमि, जलाग्नि, वायुनामणवः मिलित यदि, साध्यन्ति स्वकं कार्यं न भिन्नाः कार्यसाधकः।”

जिस तरह से भूमि, जल, वायु, अग्नि साथ मिलकर अपना कार्य साध सकते हैं, परन्तु अलग हो गए तो कार्यसाधक नहीं बनते हैं, उसी प्रकार टीमवर्क एक महत्वपूर्ण कौशल है, जिसमें विभिन्न कौशल के व्यक्ति मिलकर उत्साह एवं उमंग के साथ कठिन एवं जटिल समस्याओं का बेहतरीन समाधान प्रस्तावित करते हैं।

### टीम वर्क के महत्वपूर्ण होने के कुछ कारण –

- **कल्पनाशीलता को बढ़ावा** – टीम का प्रत्येक सदस्य किसी समस्या के समाधान के लिए अपने कौशल के अनुरूप समाधान प्रस्तावित करता है, उनमें से किसी एक सर्वश्रेष्ठ समाधान को क्रियान्वित किया जा सकता है।
- **सीखने को बढ़ावा** – विभिन्न कौशल व प्रतिभा के लोग जब मिलकर एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं, तब आपस में कई अवसरों पर ज्ञान साझा करते हैं।
- **आत्मविश्वास को बढ़ावा** – एक टीम के रूप में चुनौतियों का सामना करना, उस स्थिति से ज्यादा

अनुकूल प्रतीत होता है, जहाँ व्यक्ति विशेष को ही उस स्थिति से पार पाना होता है।

- **लक्ष्य प्राप्ति हेतु कम समय की आवश्यकता** – टीम के सदस्यों के बीच कार्यों का वितरण होने से उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ लक्ष्य प्राप्त करने में समय कम लगता है।
- **सकारात्मक वातावरण का निर्माण** – जब टीम के सदस्य आपस में साथ मिलकर काम करते हैं, तो उनमें आपस में उत्साह, जोश व पारिवारिक माहौल का निर्माण होता है। जिसे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।
- **त्रुटिमुक्त कार्य का प्रदर्शन** – टीम के रूप में कार्य करने पर किए गए कार्य का बार-बार परीक्षण होता रहता है, जिससे कार्य में त्रुटि की संभावनाएँ अत्यंत कम हो जाती हैं।
- **कार्य हेतु अवसर** – टीम वर्क सभी कर्मचारियों को उनके कौशल के अनुरूप कार्य करने का अवसर प्रदान करता है।
- **टीम की कार्य पद्धति** – सर्वप्रथम कार्य का विश्लेषण करके प्रत्येक व्यक्ति को उनके कौशल एवं अभिरूचि के अनुसार कार्य का विभाजन किया जाता है। टीम का मुखिया टीम के सदस्यों को प्रेरित करता है। टीम का मुखिया टीम के सदस्यों के साथ मिलकर टीम द्वारा किए गए कार्य का समय-समय पर परीक्षण करता है। टीम के प्रत्येक सदस्य को अपना पक्ष रखने की पूर्ण स्वतंत्रता देना भी एक कुशल टीम मुखिया का कार्य होता है।

**निष्कर्ष** – टीम में कार्य करने से हमें नई चीजों को सीखने में मदद मिलती है। टीमवर्क हमें अपने जीवन में एक आदत के रूप में विकसित करना चाहिए। जो हमें सदैव सफलता के पायदानों को पार कराते हेतु हमारे लक्ष्य प्राप्ति में कारगर सिद्ध होता है।

प्रद्रावक संकुल  
अनुगुळ





## युवाओं में तनाव : कारण और निदान

अशोक कुमार साहू

मानव जीवन की भूमिका बचपन है तो वृद्धावस्था उपसंहार है। युवा अवस्था जीवन की सर्वाधिक ऊर्जावान अवस्था होती है। अक्सर हमने अपने बुजुर्गों से यह कहते सुना है कि यह अवस्था भटकाव की होती है जो इस अवस्था में अपने को संयमित रख ले वही विजय प्राप्त करता है। हालांकि इस अवस्था में संयम, धैर्य और भावनाओं पर नियंत्रण पाना सरल नहीं होता। क्योंकि अपनी सामर्थ्य और सीमाओं का बंधन का ज्ञान नहीं होता, जबकि संसार में हर कुछ पाने और आकाश में उड़ने की ख्वाहिश रहती है। इस अवस्था में अपना हर निर्णय, सोच, विचार सही लगते हैं। जबकि वास्तव में वह सही हो यह आवश्यक नहीं। उचित-अनुचित का ज्ञान साम्य हो जाए इससे बेहतर क्या हो! पर अमूमन ऐसा होता नहीं। इसके आगे एक कदम और कि अपने ही सही की जिद उन्हें समस्या में धकेलती है और वह तनाव के संजाल में फँसते चले जाते हैं। यहीं से इस अवस्था में किसी किशोर या किशोरी को उचित अनुचित का भली भांति ज्ञान नहीं हो पाता है और यह धीरे धीरे मानसिक तनाव का कारण बनता है। मानसिक तनाव का अर्थ है मन संबंधी द्वंद्व की स्थिति। आज का किशोर युवा अवस्था में कदम रखते ही मानसिक तनाव से घिर जाता है।

युवाशक्ति किसी भी देश की वह ताकत है जो उसके भविष्य को बदल सकती है। युवाओं के शौर्य और पराक्रम की कामना हर देश करता है। निसंदेह किसी का युवा जब संकट में हो तो युवाओं में भी अधिकतर संख्या छात्र-छात्राओं की है क्योंकि इस अवस्था में अपने भावी जीवन के लिए विद्या रूपी शक्ति अर्पित करते हैं। खेद का विषय है कि आज युवा शक्ति दिग्भ्रमित है उसे अपना भविष्य असुरक्षित दिखाई दे रहा है और इसी कारण अनुशासन भंग करने पर आमादा दिखाई पड़ता है। युवा शक्ति परिवार, समाज अथवा देश की रीढ़ होती है। युवा अवस्था साधना की सच्ची अवस्था है इसी अवस्था में युवा वर्ग शक्ति संचित करता है। युवाओं की

संवेदनशीलता निश्चल, निर्मल होती है जो स्वार्थों के ऊपर उठी होती है और विश्व को समर्पित होती है। इनमें भावनाएँ भरी होती हैं। युवक प्रगति परिवर्तन और क्रान्ति के दूत होते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर के डॉक्टर, इंजीनियर बनकर अर्थोपार्जन कर सुख सुविधा युक्त जीवन निर्वाह करना चाहता है परंतु इसका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता तो उनका मन असंतुष्ट हो उठता है और मानसिक संतुलन बाधित होता है। यहीं से मानसिक तनाव की शुरुआत होती है। युवाओं में तनाव और इसके इर्द गिर्द कारक निम्नानुसार हैं:

1. **परिवार से उपेक्षित महसूस करना-** अधिकतर युवा वर्ग खुद को परिवार, रिश्तेदार व समाज से उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। वह अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं और धीरे धीरे उनमें तनाव बढ़ता है।
2. **पढ़ाई में अक्ल आने का दबाव -** आजकल पढ़ाई में प्रतियोगिता के कारण देर रात तक पढ़ना और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का व्यवहार यथा मोबाइल, लैपटॉप आदि का अधिक समय तक प्रयोग स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। यह भी तनाव का कारण बनकर उभरता है।
3. **समय पर नौकरी न लगना -** समय पर नौकरी न लगने पर युवाओं में तनाव बढ़ता है क्योंकि बचपन से ही उन्हें यह बताया जाता है कि तुम पढ़ाई करो, तुम्हें नौकरी करनी है। तब वह अंतिम लक्ष्य नौकरी को तय कर लेता/लेती है तो नहीं मिलने पर वह तनाव का शिकार बन जाता है।
4. **सिगरेट, तंबाकू व शराब की आदत -** यह अक्सर देखने में आया है कि युवा कुसंग में आकर मादक पदार्थों के सेवन में लिप्त हो जा रहे हैं या यूँ कहें कि वे नशे का शिकार हो जा रहे हैं। कई दिनों बाद वह नशे के पंजों से निकल नहीं पाते हैं।

5. **असंतुलित जीवन शैली** - आजकल अधिकांश स्थानों पर संयमित दिनचर्या देखने को नहीं मिलता है। जिसके अभाव के कारण युवा जल्द ही तनावग्रस्त हो जाते हैं। यही नहीं बुरी आदतें आदमी को अपराध की दुनिया को ओर ले जाती है।
6. **स्वभाव में धैर्य का अभाव** - युवाओं में धीरज का अभाव भी तनाव का मुख्य कारण है। द्रोण व एकलव्य के देश का युवा, स्वामी विवेकानंद का देश का युवा आज निराश है। पत्थर से ठोकर मार कर जल निकाल लेने वाली युवा शक्ति आज बढ़ती तनाव का शिकार है जिसका निदान/निराकरण जरूरी है। निर्माणात्मक सहयोग की नितांत आवश्यकता है। देश के भाग्य विधताओं को बचना है। इस परिप्रेक्ष्य में, अटल जी की कविता की एक पंक्ति प्रासंगिक प्रतीत होती है:

भरी दुपहरी में अँधियारा,  
सूरज परछाईं से हारा  
अन्तर्मन का नेह निचोड़ें,  
बुझी हुई बाती सुलगाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

7. **अकेलापन** - यह एक ऐसी अवस्था है, जो आज के तनाव का एक प्रमुख कारण है। परिस्थिति की आवश्यकता के अनुसार। अपने करियर और शिक्षा दीक्षा के लिए घर से दूर रह रहे युवाओं के लिए किसी विपरीत परिस्थिति में खुद को अकेला पाना और मन में स्थायी भाव बने किसी विशेष संदर्भ पर ही सोचते रहना और उस पर से डूबने पर कसी का सहारा न मिलना अकेलेपन को जन्म देता है।

निःसंदेह हमारे जीवन में सपनों को साकार करने और अपनों की महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने में चुनौतियाँ आती हैं, किन्तु यह चुनौतियाँ ही हैं जो हमारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है। हम सुख के मायने भी तभी समझ सकते हैं जब हमने दुख भोगा हो, बावजूद इसके स्वयं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखना तनाव को दूर रखने के लिए प्राथमिकी है। इसके लिए छोटी मगर मोटी बातों के रूप में

निम्न कार्यों को अपनी आदत में शामिल करना लाभप्रद होगा:

1. पसंदीदा संगीत सुनना।
2. योगाभ्यास करना।
3. संतुलित भोजन करना।
4. कम से कम 6 घंटे सोना।
5. पसंदीदा साहित्य पढ़ना।
6. अपने आसपास स्वच्छता रखना।
7. किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ का सेवन न करना।
8. अपने अभिभावक से अपनी चिंताओं को साझा करना।
9. कर्म करना फल की चिंता न करना।
10. वर्तमान में जीना। (संतोष करना)
11. ईमानदारी से अपना कार्य करना।

तनाव का एक सकारात्मक पहलू यह भी है कि यह संवेदनशील और रचनात्मक प्रकृति के व्यक्ति को ज्यादा होता है। ऐसे में यह समझना चाहिए जीवन और तनाव एक दूसरे के पूरक हैं। जीवन बड़ा होने पर तनाव छोटा होने लगता है। अतः जीवन को बड़ा और अर्थवान बनाना चाहिए जो समाज के लिए प्रेरक हो। तथा कथित सफलता-असफलता से बड़ा है जीवन। ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं" से स्वयं में जीवन का संचार कर हमारे युवा वर्ग के प्रतीक स्वामी विवेकानंद के कथन लक्ष्यभेदक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें हर तनाव/मनो विकार पीछे छूटता चला जाएगा और जीवन को एक नई दिशा मिल जाएगी।

“उठो, जागो और तब तक मत रूको  
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये”

चार्जमैन श्रेणी-II (टी. आर. एस.)  
एल्यूमिना परिशोधन  
दामनजोड़ी



# आर्थिक सुधार नीति और भारत का भविष्य

गौतम कुमार सिंह

## पृष्ठभूमि:

अगर आप इतिहास में देखें तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक अत्यधिक विकसित व्यवस्था थी, जिसके विश्व के अन्य भागों के साथ मजबूत संबंध थे। औपनिवेशिक युग (1773 – 1947) के दौरान अंग्रेज भारत से सस्ती दरों पर कच्ची सामग्री खरीदा करते थे और तैयार माल भारतीय बाजारों में सामान्य कीमत से कहीं अधिक उच्चतर कीमतों पर बेचा जाता था। जिसके कारण स्रोतों का द्विमार्गी ह्रास बहुत ज्यादा होता था। इस अवधि के दौरान विश्व की आय में भारत का हिस्सा 1700 ई. के 22.3 % से गिरकर 1952 में 3.8% रह गया। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अर्थव्यवस्था की पुनः निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस उद्देश्य से विभिन्न नीतियाँ और योजनाएँ बनाई गयीं और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कार्यान्वित की गयीं।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में शुरू की गयी आर्थिक नीति में निम्नलिखित का प्रावधान था:

- i. भारी और मूल उद्योगों की स्थापना में सार्वजनिक क्षेत्र की मुख्य भूमिका।
- ii. जल विद्युत शक्ति परियोजनाओं, बाँधों, सड़कों और संचार के निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र के माध्यम से सरकार की भूमिका का विस्तार।
- iii. स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी और इंजीनियरिंग संस्थानों के रूप में सामाजिक आधारभूत संरचनाओं के विकास में तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, अस्पतालों एवं डॉक्टरों, नर्सों आदि को प्रशिक्षित करने के लिए चिकित्सा संस्थाओं की स्थापना में सरकार की भूमिका।

## आर्थिक सुधार नीति:

तीन दशक पूर्व 1991 में शुरू किए गए आर्थिक सुधार नीति का वर्ष 2021 में 30 वर्ष पूरे हो गए। वर्ष 1991 के आर्थिक सुधार हेतु यह कदम भारत के स्वतंत्रता के बाद के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण था, जिसने अर्थव्यवस्था की प्रकृति को मौलिक तरीकों से बदल दिया। इससे निपटने के लिए

भारत के आर्थिक प्रतिष्ठान ने भारत की व्यापक आर्थिक बैलेंस शीट को सुधारने के लिए एवं विकास की गति को बढ़ाने के लिए एक बहुआयामी सुधार एजेंडा शुरू किया।

भारत में जुलाई 1991 से आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया अधिक स्पष्ट व अधिक व्यापक रूप से लागू की गई है। इसके तहत एलपीजी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम अपनाए गए हैं। इससे पूर्व देश में लाइसेंस तथा परमिट राज फैला हुआ था। अनेक प्रकार के आर्थिक नियंत्रणों की भरमार थी। नौकरशाही का बोलबाला था। अर्थव्यवस्था में खुलेपन का अभाव था। उस समय विश्व में आर्थिक उदारीकरण की हवा बहने लगी थी।

तीन दशक बाद कोविड-19 महामारी के कारण देश की अर्थव्यवस्था के सामने एक और बड़ी परीक्षा की घड़ी आयी। हाँलाकि दोनों संकट अपने आप में भिन्न हैं, किंतु दोनों की गंभीरता तुलनीय है।

## वर्ष 1991 के सुधारों का महत्व:

- इसके तहत आर्थिक व्यवस्था पर हावी होने वाले एवं विकसित होने की गति को बाधित करने वाले गैर-ज़रूरी नियंत्रणकारी और परमिट के विशाल तंत्र को समाप्त कर दिया गया।
- इसके तहत राज्य की भूमिका को आर्थिक लेनदेन के सूत्रधार के रूप में और वस्तुओं एवं सेवाओं के प्राथमिक प्रदाता के बजाए एक तटस्थ नियामक के रूप में परिभाषित किया गया।
- इसने आयात प्रतिस्थापन के बदले और वैश्विक व्यापार प्रणाली के साथ पूरी तरह से एकीकृत होने का नेतृत्व किया।
- 21वीं सदी के पहले दशक तक भारत को सबसे तेजी से उभरते बाजारों में से एक के रूप में देखा जाने लगा।
- वर्ष 1991 के सुधारों ने भारतीय उद्यमियों की ऊर्जा को एक उपयुक्त मंच प्रदान किया।
- उपभोक्ताओं को विकल्प दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था का चेहरा बदल दिया। पहली बार देश में गरीबी की दर में काफ़ी कमी आई।

## वर्ष 1991 के संकट की वर्ष 2021 से तुलना:

1. वर्ष 1991 का संकट: वर्ष 1991 का संकट अधिक घरेलू मांग के कारण आयात में कमी और चालू खाता घाटे के बढ़ने के कारण हुआ।
2. विश्वास की कमी के कारण धन का आउट फ्लो शुरू हो गया, जिस कारण सीएडी के वित्तपोषण हेतु भंडार में तेजी से गिरावट हुई।
3. वर्ष 2021 का संकट: महामारी से प्रेरित लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को एक हद तक रोक दिया। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन में गिरावट आई, साथ ही मांग में भी गिरावट आई।
4. मांग में गिरावट का सामना करते हुए, राजकोषीय घाटे को बढ़ाना उचित है। सरकार ने पिछले साल राजकोषीय घाटे को बढ़ाकर 9.6% करने की अनुमति दी थी।
5. वर्ष 1991 का संकट: भारत को राजकीय कर्ज में चूक से बचने के लिए टनों सोना गिरवी रखना पड़ा। तब भारत के पास महत्वपूर्ण आयातों का भुगतान करने के लिए विदेशी मुद्रा लगभग समाप्त हो गयी थी।
6. वर्ष 2021 का संकट: वर्तमान में अर्थव्यवस्था तीव्र गति से सिकुड़ रही है। केंद्र सरकार राज्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं में चूक कर रही है।

## सुधारों की आलोचना:

1. वर्ष 1991 के सुधार: वर्ष 1991 के सुधार पैकेज को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक द्वारा निर्धारित किए जाने के कारण भारी आलोचना का सामना करना पड़ा।
2. वर्ष 2021 के सुधार: सुधारों के लिए ऐसा केंद्रीकृत दृष्टिकोण अब कारगर साबित नहीं हो सकता है। इसे हाल ही में बनाए गए तीन कृषि कानूनों के प्रति उभरे विरोध में देखा जा सकता है।

## आगे की राह:

- अल्पावधि में सार्वजनिक व्यय को बनाए रखना विकास को पुनर्जीवित करने की कुंजी है।
- वर्तमान में टीकाकरण के लिए अधिक धन उपलब्ध कराने और मनरेगा की विस्तारित मांग को पूरा करने के लिए सार्वजनिक व्यय अत्यधिक वांछनीय हैं, क्योंकि यह एक सुरक्षा तंत्र साबित हो रहा है।
- साथ ही, अगले तीन वर्षों में घाटे को कम करने एवं

राजस्व लक्ष्यों को और अधिक वास्तविक स्तर पर संशोधित करने के लिए एक विश्वसनीय रास्ता अपनाने की आवश्यकता है।

- वर्ष 1991 के सुधार सफल हुए क्योंकि वे पारस्परिक रूप से सहायक सुधारों के एक मुख्य समस्या के समाधान के आसपास केंद्रित थे।
- अतः सुधारों की एक लंबी सूची के बदले प्राथमिकता सूची के आधार पर समस्याओं को एक अधिक केंद्रित रणनीतिक दृष्टिकोण से सुलझाने की आवश्यकता है।
- निवेश, समग्र मांग और आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्रोत है। निवेश के बेहतर विकल्प के संदर्भ में कुछ धारणाएँ प्रमुख हैं।
- नीतिगत ढाँचा नए निवेशों का समर्थन करने वाला होना चाहिए ताकि उद्यमियों को जोखिम लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- वर्तमान सुधारों के लिए भी आमचर्चा और आम सहमति बनाने की आवश्यकता है। केंद्र सरकार को राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम करने और सुधार के निर्णयों से प्रभावित विभिन्न हितधारकों से परामर्श करने की आवश्यकता है।

## निष्कर्ष:

वर्ष 1991 के सुधारों ने अर्थव्यवस्था को संकट से उबारने और फिर गति पकड़ने में मदद की। वर्तमान समय भी एक विश्वसनीय सुधार एजेंडा तैयार करने का समय है, जो न केवल जीडीपी को महामारी के काल के पूर्व स्तर तक वापस लाएगा बल्कि, यह भी सुनिश्चित करेगा कि विकास दर महामारी की शुरुआत के समय की तुलना में अधिक हो।

तीन दशक बाद कोविड-19 महामारी के कारण देश की अर्थव्यवस्था के सामने एक और बड़ी परीक्षा सामने खड़ी है। साल 2020 में भारत में नकारात्मक वृद्धि दर के बाद अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अब 2021 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 11.5% रहने का अनुमान लगाया है। दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच भारत एक मात्र ऐसा देश है, जिसकी वृद्धि दर दो अंकों में रहने का अनुमान है।

अतः भारत को वर्तमान समय में एक विश्वसनीय नए आर्थिक सुधार नीति की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, जो न केवल जीडीपी को महामारी के संकट के पूर्व स्तर पर वापस लाएगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि विकास दर महामारी की शुरुआत के समय की तुलना में अधिक हो।

सहायक प्रबंधक (कंपनी सचिव)  
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



## स्वास्थ्य: सर्वोत्तम धन

श्वेता रानी

एक लोकप्रिय कहावत है, 'स्वास्थ्य ही सर्वोत्तम धन' है। कहा जाता है कि एक देश की पहचान वहाँ के लोगो से होती है और लोगो की पहचान उसके देश से। तात्पर्य है कि अगर किसी देश के नागरिक स्वस्थ और समृद्ध हैं, तो वह देश भी स्वस्थ और समृद्ध की श्रेणी में आता है।

पिछले 2 वर्षों में यह सिद्ध हो गया है कि स्वास्थ्य से बड़ा कोई धन नहीं। इतना ही नहीं, ऐसे कई उदाहरण देखे गए, जिसमें धन भी स्वास्थ्य को खरीदने में असमर्थ रहा। जहाँ पूरी दुनिया महामारी की अग्नि में जल रही है, वहीं अच्छा स्वास्थ्य एक रक्षा कवच बनकर सामने आया।

जितना जरूरी एक इंसान के लिए रोटी, कपड़ा और मकान है, उतना ही जरूरी एक देश के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य है। शिक्षा लोगो को पहचान देती है और स्वास्थ्य ज़िंदगी।

किसी भी देश की समृद्धि में जन स्वास्थ्य सुविधाओं की अत्यंत अहम भूमिका होती है। यदि किसी देश की जन स्वास्थ्य सुविधाएँ मजबूत ना हों, तो मौत और बीमारी बिन बुलाए मेहमान बन जाते हैं, जो जाने का नाम ही नहीं लेते। इसका जीता जागता उदाहरण पूरी दुनिया ने देखा, जब महामारी ने पूरे विश्व में अपने पैर फैलाए। महामारी ने ऐसा तांडव दिखाया कि पूरी दुनिया सहम उठी। कई बच्चे अनाथ और कई पत्नियाँ विधवा हो गयीं। मौत ने ज़िन्दगी के अस्तित्व पर ही सवाल खड़ा कर दिया।

कोविड महामारी के पहले लहर ने पूरी दुनिया को भय और प्रकोप का आईना दिखाया और दूसरी लहर तो साक्षात मौत बनकर ही टूट पड़ी। अमीर, गरीब, जवान, बूढ़े, राजा, रंक, औरत और मर्द किसी में भी कोई भेदभाव नहीं किया। इसने सिर्फ अंतर रोग प्रतिरोधक शक्ति के आधार पर किया। कोविड महामारी ने देश की जन स्वास्थ्य सुविधाओं का सुदृढ़ता की परीक्षा लेते हुए उन्हें अंदर से हिलाकर रख दिया। जिससे जन स्वास्थ्य सुविधाओं की दृढ़ता भरभराकर गिर पड़ी।

भारत दुनिया का दूसरा सर्वाधिक आबादी वाला देश है। संडे

गार्डियन के रिपोर्ट के आधार पर जन स्वास्थ्य प्रणाली पर भारत का बजट अपने सकल घरेलू उत्पादन का 1.26% है, जो कि दुनिया में सबसे न्यूनतम है। (2019-20 के आकड़े)

इन सभी विपरीत स्थिति परिस्थिति के बावजूद सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए, ताकि भारत और यहाँ के निवासियों को स्वस्थ बनाया जा सके, उनके जीवन को बचाया जा सके, उन्हें मौत के मुँह से निकाला जा सके। इसमें सबसे महत्वपूर्ण निम्न हैं:

**चिकित्सा अवसंरचना-** महामारी काल में अस्पतालों और चिकित्सकों की महत्ता उजागर हुई। जहाँ अस्पताल लोगो के लिए मंदिर और चिकित्सक भगवान बनकर सबकी जान बचाने में लगे थे। जब कोरोना मामले बढ़ने लगे, तब सरकार ने अस्पताल में बिस्तरों की संख्या में इज़ाफ़ा किया। ऑक्सीजन का इंतजाम किया गया, ताकि लोगो को बचाया जा सके। इसके अतिरिक्त सरकार ने मरीजों को ऑनलाइन परामर्श देना भी शुरू किया, ताकि कम से कम लोग अपने घरों से निकलें। इसके अतिरिक्त सरकार के कदम से कदम मिलाते हुए नालको जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा एक बार पुनः सिद्ध कर दिया कि संकट के घड़ी में भारतवासियों के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम कंधे से कंधा मिलाकर खड़े थे और खड़े रहेंगे।

इस दौरान नालको द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेखनीय पहल निम्न हैं-

- पीएम केयर फंड में ₹ 7.6 करोड़ का योगदान
- मुख्यमंत्री राहत कोष, ओड़िशा में ₹2.6 करोड़ का योगदान
- नबरंगपुर में 200 बिस्तरों वाले विशेष कोविड अस्पताल हेतु वित्तपोषण
- नालको ने ओड़िशा सरकार के समन्यवन में अनुगुळ ज़िले के बानरपाल स्थित 150 बिस्तरों वाले कोविड अस्पताल हेतु वित्तपोषण किया।

- कोरापुट, ओडिशा के आकांक्षी जिले में 70 बिस्तरों वाले एसएलएनएम कॉलेज व अस्पताल के लिए वित्तीय सहायता।
- दामनजोड़ी और अनुगुळ में एक-एक विशिष्ट कोविड देखभाल केंद्र (प्रत्येक 50 बिस्तर) और भुवनेश्वर में एक कोविड देखभाल केंद्र (20 बिस्तर) की स्थापना की गयी।
- कंपनी के स्वामित्व वाले अस्पतालों में विशिष्ट कोरोना केंद्र और संगरोध वार्ड बनाए गए।
- ओडिशा राज्य टीकाकरण प्रकोष्ठ को 25,70,000 कोविड टीका क्षमता वाले रेफ्रिजेटेड ट्रक प्रदान किए गए।
- राज्य स्वास्थ्य विभाग, ओडिशा को 2 वेंटिलेटर युक्त एम्बुलेंस प्रदान किया गया।
- भुवनेश्वर नगर निगम अस्पताल को डिजीटल एक्स-रे मशीन प्रदान किया गया।

इन सबके बावजूद, प्रत्येक भारतवासी के चित्त में यह सवाल उठता है कि क्या हमारी चिकित्सा अवसंरचना परिपूर्ण है? क्या सरकार द्वारा उठाए गए कदम पर्याप्त थे? क्या जो नागरिक असमय काल के गाल में समा गए, उन्हें बचाने के पर्याप्त साधन मौजूद थे? क्या उन्हें पर्याप्त चिकित्सा सुविधा समय रहते मुहैया करायी गयी थी? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिनकी सूची बनाने के लिए लेखनी कम पड़ जाए। हम सबका अंतःमन जानता है कि इन प्रश्नों के उत्तर अंसतोष व क्षोभ व विषाद दायक ही हैं।

कोविड की दूसरी लहर ने हमारे विफलता का प्रमाण जग के सम्मुख बिखेर दिया, जिसे बटोरनी की सामर्थ्य व धैर्य हमारे पास ना था। हम सब मात्र मूक दर्शक बनकर मौत का तमाशा देखने को विवश रहे। पर्याप्त संख्या में बेड ना होने के कारण कितने मरीजों ने अस्पताल के दरवाजे पर ही दम तोड़ दिया। गंगा में तैरती लाशें हो या विवश स्त्री जो अपने मुख से अपने पति को ऑटो में ऑक्सीजन देने का विफल प्रयास कर रही थी। चाहे शमशान घाट पर अंतिम क्रियाकर्म हेतु लोगो की पक्तियाँ.....

ऑक्सीजन की कमी, दवाईयों की कालाबाजारी सबने हमारी चिकित्सा सुविधा पर ही सवालिया निशान लगा दिया। हमें अपने अतीत से सीख लेनी चाहिए। कहा भी गया है- "दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है।" महामारी की दूसरी लहर के कोहराम व हुई मौतों से सीख लेते हुए हमें

निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए-

### जन स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए सकल घरेलू उत्पादन के अंश का आवंटन

भारत को अपने जीडीपी का आवंटन जन स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए बढ़ाना चाहिए। ये हमारे देश के नीव को मजबूत करेगा और आने वाली हर महामारी से रक्षा करेगा।

### सभी राज्यों में चिकित्सा सुविधाएँ

आज भारत की जनता स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए कुछ बड़े शहरों व राज्यों में स्थित अस्पतालों पर निर्भर है। प्रत्येक गाँव में अस्पताल की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि लोगों को चिकित्सा सुविधा हेतु दर-दर की ठोकर खाने के लिए विवश ना होना पड़े।

### नियमित चिकित्सा जाँच

नियमित चिकित्सा जाँच बिमारियों को शुरूआती दौर में ही पकड़ने में सक्षम होती है। लोगो को सरकारी अस्पतालों में यह सुविधा निःशुल्क अथवा नाममात्र के शुल्क पर उपलब्ध होनी चाहिए।

### जागरूकता – स्वास्थ्य बीमा

आज भी भारत में स्वास्थ्य बीमा के प्रति लोगो की जागरूकता काफी कम है। लोगो को इसके महत्व और लाभ के बारे में बताना और समझाना चाहिए, ताकि विपदा के समय धन की कमी से ना जूझना पड़े।

### योग

कहा जाता है कि योग तन और मन दोनों को स्वस्थ बनाता है। भारत में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। हम सभी को योग को अपने जीवन शैली का भाग बनाना चाहिए। योग हमारे प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

### निष्कर्ष

कहा जाता है कि हर असफलता कुछ ना कुछ सीख देकर जाती है। किसी भी कठिनाई का सामना करने के लिए उठाया गया प्रत्येक कदम सफलता की तरफ एक कदम होता है। हमें इस महामारी से सीख लेनी होगी ताकि भविष्य में आने वाली हर कठिनाई से लड़ा और जीता जा सके।

सहायक प्रबंधक (वित्त)  
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



## मकसद

सदाशिव सामन्तराय

घड़ी ने रात के 9:00 बजने का संकेत दे दिया था- 9 बार घंटी बजाकर। "उपफ़ ! 9:00 बज गए?" राजीव ने घड़ी की ओर देखकर मन ही मन कहा। "राजू देखना बाहर कोई इंतजार तो नहीं कर रहा है? दर्द से मेरा सर फटा जा रहा है। अब मैं और नहीं बैठ सकता। अगर कोई बैठा है तो उसे कह देना कि कल आएगा..." पानी का गिलास होंठों से लगाते हुए, अपने पीअन राजू को उसने सख्त निर्देश दे दिए थे।

अचानक उसे याद आया - अरे आज तो हमारे शादी की सालगिरह है। नीता इसलिए घर पर ही केक बनाने वाली है। उसने उसे शाम को जल्दी आने को कहा था। कोरोना की महामारी में कहीं बाहर जाना तो संभव नहीं था और कोई साल होता तो शादी की सालगिरह बड़ी धूमधाम से मनाते, पर इस साल तो कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया है। कोरोना ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। हर तरफ़ अफ़रा-तफ़री का माहौल है। लोग हाहाकार कर रहे हैं। लाखों लोग अपनों को हमेशा के लिए खो चुके हैं। कोई भी इससे अछूता नहीं है- चाहे गरीब हो या अमीर। सबका संसार थम सा गया है। पर समय का पहिया रुकता नहीं है वह तो बस चलता रहता है। वक्त ने हर शख्स को अपने तरीके से जीना सिखा दिया है और कई लोगों की जिंदगी बदलकर रख दी है - इस मनहूस कोरोना ने राजीव की जिंदगी को भी उथल-पुथल कर दिया है - यह मानना सौ प्रतिशत सही नहीं होगा क्योंकि उसमें राजीव का भी निर्णय काफी अहम था।

डॉ. राजीव दिल का एक बहुत ही मशहूर डॉक्टर था। पीजी और सूपरस्पेशलाइजेशन उसने अपनी काबिलियत के बल पर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में की थी। वहीं उसने कार्डियोलॉजी विभाग में नौकरी ज्वाइन कर ली थी, धीरे-धीरे ओपन हार्ट सर्जरी में भी वह दुनिया का एक जाना माना डॉक्टर बन गया था। भगवान का न जाने कैसा आशीर्वाद था, कि सौ प्रतिशत मामलों में उसे सफलता प्राप्त थी। वैसे राजीव एक बहुत ही गरीब घराने से था, जाति में भी वह एक निम्न जाति का था, पर पढ़ाई में अव्वल था। अपने गांव राजापुर से स्कूल पास करके, हाई स्कूल में राज्य में तीसरे

नंबर पर उत्तीर्ण होकर बी.जे.बी कॉलेज में साइंस में पढ़ने लगा था। वहां भी अपनी मेहनत और कठिन परिश्रम से राज्य में अव्वल नंबर पर पास हुआ था। मेडिकल के परीक्षा में पूरे देश में 20वां स्थान लेकर एम्स में एमबीबीएस की पढ़ाई की। वहीं उसकी जान-पहचान नीता से हुई थी। दोनों एक-दूसरे को भाने लगे थे न जाने कब! रीता एक बहुत ही अमीर घराने से थी; उसके पिताजी प्रदेश के चीफ़ इंजीनियर थे। जाति में भी वह एक उच्च जाति से थी। पर युवा दिल कहाँ मानता था। राजीव अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ एक बड़ा अच्छा गायक था। कॉलेज के कार्यक्रम में जब राजीव किशोर कुमार का गाना गाता था- वन्स मोर, वन्स मोर के नारों से उसे कई गाने, गाने पड़ते थे। नीता को लगता राजीव हर गाना उसी के लिए गा रहा है। वक्त गुज़रता रहा, दोनों दोस्त की तरह ही साथ-साथ चलते रहे। एमबीबीएस की पढ़ाई के बाद दोनों को ही ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पीजी और फिर सुपरस्पेशलाइजेशन मिला। राजीव कार्डियक सर्जन और नीता मेडिसिन। दोनों हॉस्पिटल में भी साथ-साथ रहते। धीरे-धीरे दोनों में नजदीकियाँ बढ़ने लगी, और एक दिन दोनों ने ही शादी करने का विचार कर लिया था। नीता के घर वाले पहले इस रिश्ते के लिए राजी नहीं थे पर राजीव के नाम, शोहरत और नीता के निर्णय ने उन्हें शायद मना लिया था।

उन दोनों की जिंदगी गाड़ी तेज रफ़्तार से चल रही थी कि एक दिन राजीव के पास खबर आई कि उसके पिताजी का देहांत हो गया। प्लान करके आते-आते तीन दिन बीत गए थे। इसी बीच सदमें की वजह से उसकी माताजी भी चल बसी।

राजीव अपने माँ-बाप का एकलौता बेटा था। जब गाँव पहुँचा तो, सब खत्म हो चुका था। दुनिया में वह अकेला पड़ गया था। गाँव वालों ने रो-रोकर उसे बताया कि रात-दिन उसके पिताजी और माताजी उसकी याद में ही गुजरते थे। रोज आपस में बात करते बेटा राजीव कब आएगा? न जाने कैसा होगा विदेश में....! गाँव वाले जब बोलते उसे बुला क्यों नहीं लेते? कहते- नहीं मेरा बेटा इतना बड़ा आदमी बन गया है यही हमारी खुशी है। वो यहाँ आकर क्या करेगा? मरते दम तक उन्होंने दिल पर पत्थर रखकर राजीव को वापस आने

को कभी नहीं कहा था। उस दिन राजीव को लगा था कि शायद उसका नाम और शोहरत सब बेकार है। इतना ऊंचे दर्जे का डॉक्टर होकर अगर अपनी माँ व पिता को ना बचा सका तो क्या फायदा? उस दिन उसके पास धन, शोहरत, घर, गाड़ी सब थे पर माता-पिता न थे। खूब बिलख-बिलख कर वह रोया था और उस दिन उसने सोचा था कि वह अपने देश वापस जरूर आएगा। नीता ने पहले तो उसे समझाने की बहुत कोशिश की थी, पर आखिर में वह मान गई थी। पर राजीव के लिए यह निर्णय लेना काफी दुश्वार हो गया था। वह क्या करे समझ नहीं पा रहा था।

पर मार्च महीने में जब कोरोना ने पूरे विश्व को मौत की आगोश में लेना शुरू किया तो इंग्लैंड के साथ-साथ भारत में भी लाखों लोगों की जानें गई थी। राजीव को खबर मिली कि, उसके गाँव में एक दिन में दस लोगों की जान चली गई। उसमें से पाँच उसके रिश्तेदार थे। उसके सगे-संबंधी एक के बाद एक उससे दूर होते जा रहे थे। इसका कारण यह था कि गाँव के आस-पास न तो कोई हॉस्पिटल था न कोई अच्छा डॉक्टर। जिसकी वजह से कोरोना जैसी महामारी एक-एक कर लोगों को मक्खी-मच्छर की तरह मारता गया। धीरे-धीरे पूरा गाँव कोरोना की चपेट में आता जा रहा था।

उस दिन राजीव ने अपने जीवन का एक अहम निर्णय लिया और ऑक्सफोर्ड की नामी-दामी नौकरी छोड़कर भारत आ गया। गाँव के पास एक छोटे से कस्बे में एक क्लिनिक खोलकर वहाँ के लोगों का बिल्कुल मुफ्त इलाज करने लगा। यह बात उसने किसी भी यार दोस्त को भी नहीं बताई थी-वरना शायद वे उसे ऐसा करने नहीं देते।

पिछले 6 महीने से वह रोज सौ मरीजों का मुफ्त इलाज कर रहा है। टर्मिनल मरीज भी उसके क्लिनिक में आकर अच्छा होकर वापस जा रहे थे। अब तक शायद वह पाँच सौ से भी ज्यादा लोगों की जान बचा चुका था। नीता ने भी उसका साथ बखूबी दिया था। उसके गाँव वाले तो मानो उसे वहाँ पाकर खुशी से पागल हो रहे थे पूरे इलाके में उनके गाँव का नाम हो गया था। निजी रूप से तो उनका जीवन काफी कठिन हो गया था। पर उन दोनों को आत्म संतुष्टि का एहसास हो रहा था। धीरे-धीरे आस-पास के इलाके में इस खबर का तेजी से प्रचार हो गया। सरकार ने भी उसे भुवनेश्वर में एक प्लाट आवंटित किया था। जहाँ वो अपना सुपर-स्पेशलिटी हस्पताल बना सकता था। पर राजीव तो अपने लोगों के बीच रहना चाहता था। इसीलिए तो वो इतनी दूर से यहाँ आया था, पर कभी कभी राजीव को लगता था कि क्या उसने ठीक किया। अपने जीवन भर की कमाई कला को वो बर्बाद तो नहीं कर रहा है? एक सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर से वह एक

जनरल फिजिशियन बन गया था। चाहकर भी उसे अपने जीवन का मकसद नहीं मिल रहा था। जो उसे कभी-कभी मायूस कर देता था।

“साहब रात के दस बज गए हैं। आप कह रहे थे कि आपको जल्दी घर जाना है।” राजीव को आँखें मूँदे देख, हेड रेस्ट पर सिर टिकाए काफ़ी देर से पड़े रहते देख कर- डरते-डरते राजू ने धीरे से कहा।

“अरे! दस बज गए।” हड़बड़ा कर राजीव ने आँखें खोल दी, “अरे आज हमारी शादी की सालगिरह भी कोरोना की भेंट चढ़ गई।” नीता भी न जाने क्या सोचेगी? खैर मैंने तुम्हें बाहर देखने का कहा था। उन्हें मना करो और क्लिनिक बंद करो।

“जी, जी! साब! दो लोग काफ़ी देर से बैठे हैं, इंतजार कर रहे हैं। मना करने पर भी आपसे सिर्फ मिलकर चले जाएंगे, ऐसा बोल रहे हैं, कहते हैं- आपके स्कूल के दोस्त हैं।” अपना नाम कमल और रवि बता रहे हैं।

“क्या! कमल और रवि आए हैं! अरे! मेरे लंगोटिया यार...दोनों इतनी दूर से आए हैं..” कहकर राजीव उनकी तरफ़ तेजी से लपका। “अरे कमल, अरे रवि...तूने पहले क्यों नहीं बताया?” राजीव ने उसके उदास चेहरे को देखते हुए पूछा।

“दोस्त! तुम्हारे जैसे वर्ल्ड क्लास डॉक्टर से पूछे बिना कैसे मिलते? दोस्त तुम हमें अभी भी तुम याद रखे हो, यही हमारे लिए बड़ी बात है।” कहते-कहते दोनों की आँखें भर आई थी।

“क्या यार! बचपन के दोस्तों को कोई भुला सकता है? कहकर राजीव ने दोनों को गले लगा लिया।

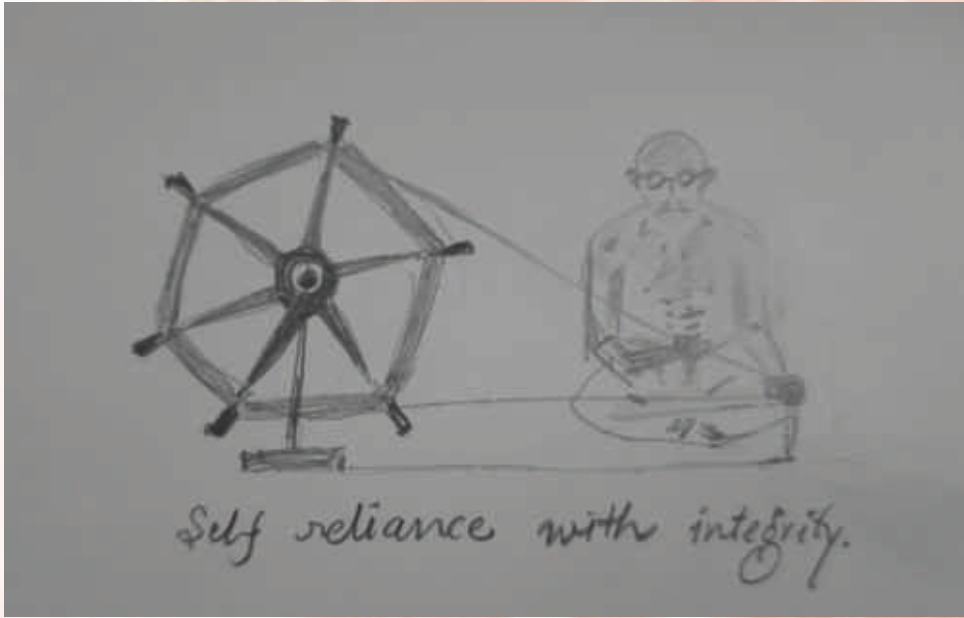
“दोस्त! हमें छोड़ दे, हम दोनों को कोरोना है। हम दोनों के फेफड़े बुरी तरह से प्रभावित हैं। हम दोनों काफ़ी बीमार हैं। ऑक्सीजन भी 75% तक आ पहुँचा है। कोई भी अस्पताल हमें भर्ती नहीं कर रहा है। कहीं भी कोई भी बेड खाली नहीं है। बिना इलाज के हम दोनों की मौत निश्चित थी। किसी ने बताया कि राजीव ने यहाँ क्लिनिक खोला है। पहले तो विश्वास नहीं हुआ। यहाँ आकर पता चला। सोचा मरना तो निश्चित है, चलो दोस्त से मिलकर अलविदा करते हैं।” कहकर दोनों रोने लगे थे।

“दोस्तों! तुम अपने यार के साथ हो, तुम्हें कुछ भी नहीं होगा; मैं हूँ ना, कोरोना की ऐसी की तैसी” कहकर राजीव ने फिर से उन्हें गले लगा लिया। आज राजीव को लगा कि उसे अपने जीवन का मकसद मिल गया था।

कार्यपालक निदेशक (वाणिज्यिक-सामग्री)  
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



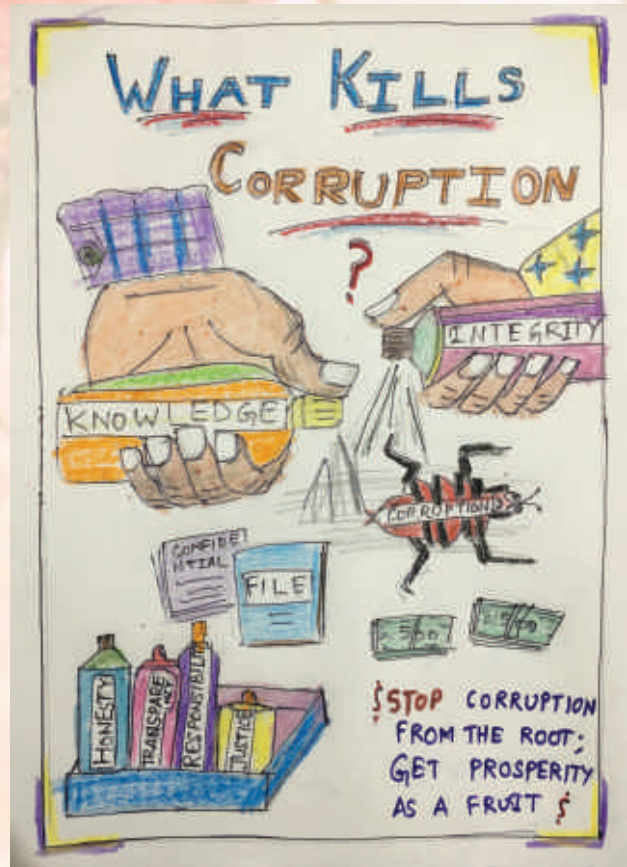
## सतर्कता जागरुकता के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कृत पोस्टर



श्री राकेश रंजन, क्षेत्रीय कार्यालय (पश्चिम), मुंबई।



श्री सुरजीत कर, निगम कार्यालय, भुवनेश्वर।



सुश्री सोनिका प्रसाद, क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व), कोलकाता।



## जन स्वास्थ्य सुविधाएँ और महामारी

बालगोपाल राजू

कोरोना के खतरे के मद्देनज़र अधिकांश आबादी द्वारा साफ-सफाई का ध्यान रखा जा रहा है। किंतु वास्तविक लाभ तभी होगा, जब यह आदत खतरा टल जाने के बाद भी बरकरार रहे।

लोगों में स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने तथा स्वास्थ्य को लेकर प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक करने के उद्देश्य से मनाया जाने वाला 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' इस बार कोरोना महामारी के संक्रमण के डर के बीच 6 अप्रैल को ही मनाया गया है। कोरोना संकट ने दुनिया भर में लोगों को बैचैन कर दिया है। वह भी ऐसे वक्त में जब दुनिया भर के तमाम देश स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में लगातार तरक्की कर रहे हैं। लेकिन कोरोना जैसे वायरस के सामने जब अमेरिका जैसा विकसित देश भी खुद को बेबस पाता है, तब प्रतीत होता है कि अभी स्वास्थ्य सुविधाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए बहुत कुछ करना शेष है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी ये मानना है कि दुनिया की कम से कम आधी आबादी को आज भी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। विश्व भर में अरबों लोगों को स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं सुलभ नहीं होती हैं। करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिन्हें रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं तथा स्वास्थ्य देखभाल में से किसी एक को चुनने पर विवश होना पड़ता है। विश्व भर में 80 करोड़ से भी ज्यादा लोग अपने घर के बजट का कम से कम 10% स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं पर खर्च करते हैं।

चिंता की स्थिति यह है कि पिछले कुछ दशकों में एक ओर जहाँ स्वास्थ्य क्षेत्र ने काफी प्रगति की है, वहीं कुछ वर्षों के भीतर एड्स, कैसर जैसी जानलेवा बीमारियों के प्रकोप के साथ हृदय रोग, मधुमेह, क्षय रोग, मोटापा, तनाव जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में भी तेजी से वृद्धि देखी गयी है, जिस कारण दैनिक चुनौतियाँ भी दैनिक आधार पर बढ़ रही हैं।

भारत में ग्रामीण तथा निर्धन आबादी में सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का विस्तार करने के उद्देश्य से "आयुष्मान भारत कार्यक्रम" की शुरूआत की जा चुकी है। इस कार्यक्रम के तहत देश की जरूरतमंद आबादी को अपेक्षित स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। देश भर के सरकारी अस्पतालों में इतनी बड़ी आबादी के लिए करीब सात लाख बिस्तर हैं। हमारे यहाँ चिकित्सकों तथा उन पर निर्भर आबादी का अनुपात संतोषजनक नहीं है। बिस्तरों की उपलब्धता भी बेहद कम है। कुछ राज्यों में तो स्थिति इतनी बदतर है कि 40 से 70 हजार आबादी पर केवल एक सरकारी डॉक्टर ही उपलब्ध है।

आज की भाग-दौड़ भरी तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में अधिकांश लोग जाने-अनजाने में ही अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इसलिए ज़रूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कामकाज के साथ अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखे ताकि ज़िंदगी की यह रफ़्तार पूरी तरह दवाओं पर निर्भर होकर न रह जाए।

साथ ही हमारी सरकार, हमारे नेताओं व प्रतिनिधियों का यह परम कर्तव्य बोध होना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक को सुलभ स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराया जाना उनका प्रथम दायित्व हो। इस दायित्व बोध की प्राप्ति के लिए उन्हें पर्याप्त प्रयास करते हुए, यथोचित कदम उठाना चाहिए।

कहा भी जाता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, और राष्ट्र की उन्नति का स्तर वहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य से ही आंका जाता है।

वरिष्ठ प्रबंधक (ई एण्ड आई)  
एल्यूमिना परिशोधक  
दामनजोड़ी



# थर्ड जेंडर का समाज और उनकी समस्याएँ

कृष्णा कुमारी

कहा जाता है कि भारतीय समाज और संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता 'समन्वयशीलता' है, पर कटु सत्य यह है कि यह बात सभी संदर्भों में समान रूप से लागू नहीं होती। बहुवर्गीय सामाजिक संरचना के आवरण के पीछे मूल संरचना में हमारा समाज दो वर्गों में बंटा हुआ है। स्त्री और पुरुष दो वर्ग ही मुख्य धारा में है। जन्म से ही इनका वर्ग निर्धारण हो जाता है। इन्हीं दोनों वर्गों के सामान्तर एक और वर्ग है: जो न स्त्री है और न पुरुष है, लेकिन हमेशा से समाज का अभिन्न हिस्सा रहा है। जिसे समाज थर्ड जेंडर, हिजड़ा, तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, यूनक, खोजवा, मौगा, छक्का, पावैया, खुस्ता, जनखा, अनरावनी, शिखंडी, ख्वाजासरा आदि नामों से संबोधित करता है। आज हम 21वीं शताब्दी के मशीनी युग में जी रहे हैं, जहाँ हर काम बटन दबाने से चुटकियों में ही संपन्न हो जाते हैं। मगर मन व मस्तिष्क आज भी दकियानूसी विचारों की संकीर्णता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं।

जैसा कि आप जानते हैं कि किन्नर या हिजड़ा माता-पिता नहीं बन सकते हैं लेकिन सवाल यह उठता है कि किन्नर कैसे पैदा हो जाते हैं? आपको बता दें कि किन्नरों का जन्म भी हमारे ही घर में होता है। किन्नर के रूप में जन्में बच्चे को माता-पिता स्वयं ही किन्नरों के हवाले कर देते हैं या किन्नर खुद उसे ले जाते हैं, जिसका वह पालन पोषण करते हैं। मानव जाति की क्रोमोसोम संख्या 46 होती है। जिसमें 44 आटोजोम होता है, जबकि बाकी दो सेक्स क्रोमोजोम होते हैं। यही दो सेक्स क्रोमोसोम सेक्स का निर्धारण करता है। अगर यही दो सेक्स क्रोमोसोम XY है तो वह पुरुष कहलाता है, जबकि XX होने पर महिला कहलाता है, XY और XX क्रोमोसोम के अलावा (XXX,XY,OX) क्रोमोसोम वाले मनुष्य को क्रोमोसोमल डिसऑर्डर बोलते हैं जिसे आम भाषा में छक्का या हिजड़ा या किन्नर बोलते हैं। जब बच्चा माँ के गर्भ में पल रहा होता है तब कुछ कारणों से क्रोमोजम

नंबर में या क्रोमोसोम की आकृतियों में परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण किन्नर पैदा हो जाते हैं।

**थर्ड जेंडर के प्रकार-** किन्नर, हिजड़ों या थर्ड जेंडर से अभिप्राय उन लोगों से है, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हों अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। हिजड़ों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है – बुचरा, नीलिमा, मनसा, हंसा।

- “बुचरा”: वास्तविक हिजड़े तो बुचरा ही होते हैं क्योंकि ये जन्मजात न पुरुष होते हैं, न स्त्री होते हैं।
- “नीलिमा”: नीलिमा किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं।
- “मनसा”: तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा स्त्रीलिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं और स्वयं को हिजड़ों के अधिक निकट समझते हैं। इन्हें सामान्य मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग के द्वारा वापस इनके वास्तविक लिंग में भेजा जा सकता है।
- “हंसा”: शारीरिक कमी या नपुंसकता आदि यौन न्यूनताओं के कारण बने हिजड़े होते हैं। वे किन्नर किसी यौन अक्षमता के कारण स्वयं की नियति को हिजड़ों के साथ जोड़ लेते हैं। इनका इलाज करने के बाद इनमें से अधिकांश को पुरुष अथवा स्त्री बनाया जा सकता है और ये भी सामान्य जीवन जी सकते हैं।

**इनके अलावा और भी दो प्रकार के किन्नर समाज के बीच पाए जाते हैं -**

- “अबुआ”: नकली हिजड़ों को अबुआ कहा जाता है जो वास्तव में पुरुष होते हैं, किन्तु धन के लोभ में हिजड़े का स्वांग रख लेते हैं। अबुआ वास्तव में धन के लोभ में किन्नर

बनकर किन्नर को न्यौछावर के रूप में मिलने वाली धनराशि को लूटने का काम करते हैं। ये प्रायः सामान्य पुरूष होते हैं और आवश्यकता पड़ने पर साड़ी पहनकर किन्नर बनने का नाटक करके हिजड़ों के अधिकारों पर कुठाराघात करते हैं।

- “छिबरा”: जबरन बनाए गए हिजड़े छिबरा कहलाते हैं। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण और भयावह यंत्रणा से गुजरते हैं छिबरा। पारिवारिक रंजिश के कारण कुछ लोग शत्रु के परिवार के लड़के-लड़कियों को उठाकर ले जाते हैं और उनके लिंग हटवाकर उन्हें हिजड़ा बना देते हैं। यह जघन्य कृत्य करने वाले पिशाच एक व्यक्ति के जीवन को नरक बना देते हैं और पीड़ित बच्चे को बिना किसी अपराध के आजन्म इस यंत्रणा से गुजरना पड़ता है। इनमें से कुछ को वापस उनके लिंग में लाया जा सकता है लेकिन यह बड़ी ही जटिल और खर्चीली प्रक्रिया है।

### किन्नरों या थर्ड जेंडर की वास्तविक परिस्थिति और

**समस्या** – वैसे तो किन्नर पूरी दुनिया में मौजूद हैं और हर जगह पर उनकी सामान्य और विशिष्ट समस्याएं हैं, पर जब बात भारतीय समाज की आती है तो ये समस्या कुछ ज्यादा ही गंभीर रूप धारण कर लेती है, क्योंकि भारत में धार्मिक मान्यताओं की जड़े काफी मजबूत हैं और किन्नर समुदाय भी इससे बच नहीं पाया है। किन्नरों की इस समस्या को लोग और खुद किन्नर समुदाय भी एक अभिशाप के रूप में देखते हैं। किन्नरों की वर्तमान भारतीय समाज में परिस्थिति कैसी है, उस पर एक दृष्टि डालें तो ये बात सामने आती है।

किन्नरों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनके पास आजीविका के साधन बहुत ही कम मात्रा में हैं। जिससे उनको काफी हालाकियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान परिस्थिति के अनुसार हम किन्नरों को उनके काम के आधार पर मुख्य रूप से चार भागों में बांट सकते हैं।

- जो किन्नर अखाड़े में रहते हैं, वे जब किसी के यहां बच्चा हुआ हो या शादी विवाह में आशीर्वाद एवं बधाईयाँ देने जाते हैं और कई त्यौहारों पर बाजारों से चंदा इकट्ठा करने जाते हैं।
- जो किन्नर अखाड़े के बाहर रहते हैं, वे लोग ज्यादातर ट्रेन और बसों में चंदा मांगते हैं। कभी कभार वे शुभ प्रसंगों में बधाईयां देकर या फिर कहीं भजनमंडली में नाच-गान करके गुजारा करते हैं।

- कुछ किन्नर पैसे और काम की कमी के कारण देह व्यापार (वेश्यावृत्ति) करने पर भी मजबूर हो जाते हैं।

- और आज के विकासशील समाज में कुछ किन्नर कदम मिलाते हुए बहुत सी जगहों में अपने हुनर और शिक्षा के दम पर अच्छा काम करके भी पैसा कमाते हैं।

वैसे किन्नर समाज में जो अखाड़ों में रहते हैं, उन्हें पूर्ण रूप से शुद्ध किन्नर माना जाता है और अगर वे गुस्से में श्राप दे दें तो बहुत ही बुरा माना जाता है। तो इसी चीज के कारण लोगों में ज्यादातर डर बना रहता है। उनके इस गुस्से वाली प्रकृति के कारण लोग इनसे दूरियां बनाएं रखते हैं।

किन्नरों की शारीरिक रचना और आवाज, चाल एवं बहुत सी चीजों में दूसरे लोगों से काफी भिन्नताएं होती हैं, जिसकी वजह से उनकी हँसी उड़ाई जाती है और सार्वजनिक जगहों जैसे – मॉल, मंदिर, अस्पताल जैसे जगहों पर इनके प्रवेश पर प्रतिबंध भी लगाए गए हैं।

ज्यादातर किन्नरों को उनके परिवार के साथ रहने नहीं दिया जाता है। परिवार के लोग समाज के डर से खुद ही उनको किन्नरों को सौंप देते हैं या फिर किन्नर व्यक्ति खुद ही समाज से तंग आकर घर छोड़ देते हैं या फिर उनको आजीवन अपनी पहचान छुपाके जीवन गुजारना पड़ता है। किन्नर लोगों को अपने नागरिक अधिकारों का प्रयोग करने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और भारत में संमलिंगी संबंधों को अपराध माना जाता है, जो किन्नरों पर भी प्रभाव डालता है।

ऐसी बहुत सी समस्याओं का सामना हर रोज किन्नरों को करना पड़ता है, लेकिन वर्तमान समय में किन्नरों के उत्थान के लिए सरकार ने प्रयास भी आरम्भ किए हैं। किन्नर भी तो आखिर हैं तो मनुष्य ही, यो सच हमको कभी नहीं भूलना चाहिए। किन्नरों के उत्थान के लिए और उनका विकास करने के लिए सरकार और बहुत सारी संस्था प्रयास कर रही है, जो सच में सराहनीय है। पर इस समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए हम सबको आगे आना होगा और हमें अपनी सारी भ्रांतियों और अंधविश्वास को त्याग कर मन से उनको अपनाना होगा।

अर्धांगिनी- श्री हिमांशु राय  
उप प्रबंधक (राजभाषा)  
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



## माँ चली जाती है.....

सोनी कुमारी

माँ...  
कैसे आँचल से ढक,  
सुला देती है;  
खुद कुहनी ही टिका,  
रात बिता देती है,  
संतान को सुख दे-गोद दे,  
नींद-चैन दे;  
भले कुंभला जाती है,  
पर, संतान के लिए;  
दुआएँ छीन,  
सब देवों से लड़ जाती है,  
उसकी उम्मीदों में,  
रात को दिन,  
तो दिनको रात कर जाती है,  
वही जी-वही माँ  
अक्सर गीले पलकों को पोछ;  
बच्चे की याद में चुपके से,  
रो जाती है,  
कहीं वृद्धाश्रम तो,  
कहीं देव-स्थान;  
कहीं घर,

कहीं बाग-उपवन,  
कहीं सड़क,  
पर अपनी आँख सोख आती है;  
माँ कहीं यूँही अकेले,  
तो कभी परिवार में,  
तन्हा रह जाती है,  
सब माँ कैकेयी नहीं होती,  
कभी कैकेयी,  
कभी मंथरा सी बना दी जाती है,  
अपने अनपढ़, अपने कमपढ़,  
अपने भावुक, आपने वाचाल,  
गुणों से।  
माँ फिर भी सब,  
सह जाती है;  
बच्चे की दूरी भी,  
बच्चे से दूरी भी,  
बच्चे का इंतजार भी,  
बच्चे का दुत्कार भी,  
पर कर जाती है,  
उसी बच्चे का जीवन,

खुशनुमा-सदाबहार,  
कभी-दादी, कभी-नानी;  
कभी-बाई, कभी-दाई;  
तो कभी दोष-रुसवाई सहकर,  
जिला जाती है, बच्चे को;  
अपनी साँस, अपनी जिंदगी;  
अपना मोह देकर,  
मूंद जाती है आँखें,  
खुद से, सारे सच-झूठ से;  
रह जाती है, उसकी यादें;  
बस यादों में,  
रह जाती है माँ;  
चली जाती है,  
अपना कण-कण देकर;  
होकर दूभर,  
माँ सोकर अर्थी पर...

अर्धांगिनी- श्री रोशन पाण्डेय  
उप प्रबंधक(राजभाषा)  
निगम कार्यालय  
भुवनेश्वर



## यूँ अकेले कहाँ हैं हम (सतर्क भारत में निहित उद्देश्यमूलक कविता)

डॉ. धीरज कुमार मिश्र

हमारी खामोशियाँ  
हमारी नज़र अंदाजगी  
हमारी "ना" कहने की मजबूरियाँ  
दीमक हैं हमारे देश की प्रगति में  
जहाँ समाज और हम  
दोनों ही टूटते हैं  
खोखले होते हैं  
आखिर किस लिए ?  
ये "मैं" सोच की खाई  
खुदगरजी ही तो है  
जिसमें अकेलेपन का घनघोर अँधियारा है  
और हमें डूबते चले जाना है।  
एकता, अखंडता और संप्रभुता के भारतवर्ष में हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।  
सत्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, 75 बरस के भारतवर्ष हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।

समता, समानता और बंधुत्व के राष्ट्रीय बोध से हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।  
निडर हम बुलंद हौंसले  
सतर्क आँखों से करें प्रहार  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।  
स्वावलंबन से आत्मनिर्भर भारत की  
प्रगति करें प्रशस्त हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।  
जन-जन बने जागरूक भारत की  
भ्रष्टाचार मिटाते हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।  
कहे जग पुनः भारत को सोने की चिड़िया  
आओ भारत को विश्व गुरू बनाएँ हम  
यूँ अकेले कहाँ हैं हम।

सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)  
खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी



## कदम बढ़ा !

विनय कुमार

वो पत्थर था, वो पत्थर है,  
वहीं पर था, वहीं पर है।

उसको दोष देकर तेरी पीड़ा कम नहीं होगी,  
ग़म से तेरे, उसकी आंखें, नम नहीं होंगी।

गिरना तेरी किस्मत सही, उठना तेरी पहचान है,  
सांसें नहीं, धड़कन नहीं, हिम्मत से तेरी जान है।

लेके खंजर खींच ले तू, हाथों में नहीं जो रेखा,  
लहू की गर्मी से हमने, फ़ौलाद पिघलते देखा।।

सीने में धधकती आग हो तो, क्या दिन है, और रात है क्या?  
पर्वत भी रास्ता देते हैं, इक पत्थर की औकात ही क्या?

आई तो नहीं, मंजिल वो अभी,  
निस्तब्ध सा यूँ तू क्यूँ है खड़ा?  
शेरोँ सा गरज, शोलों सा धधक,  
गिरने दे लहू, तू कदम बढ़ा !!

उप प्रबंधक(यांत्रिक)  
एल्यूमिना परिशोधन  
दामनजोड़ी



## तल्लियाँ

सुनील कुमार

क्या कहूँ, क्यूँ कहूँ, किस से कहूँ अब जाने दे  
मुझको मेरी तन्हाइयों के साथ ही रह जाने दे

मेरे अंदर है एक तूफ़ान, उसको वहीं मँडराने दे,  
गर समझती है तो समझे, वरना ये दुनिया जाने दे

क्या लिखा है इन लकीरों में मुझे है क्या पता  
मुझको है इतिहास लिखना, बस वही लिख जाने दे

तल्लियाँ हैं मेरे भीतर इन रस्मो-रिवाजों के लिए  
तेरी दुनिया तू ही रख, मुझको मेरी बनाने दे

ए खुदा एक ऐसी दुनिया तू मुझे बसाने दे  
तू रहे हमसब के दिल में, दैर-ओ-हरम को जाने दे

वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन),  
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



## कविताएँ

डॉ. अशोक कुमार जोशी

### क्रान्ति की बू

मैंने एक पेड़ से पूछा...  
तुम्हें क्यों काट डाला गया ?  
तुम तो लोगों को छांह देते थे  
उसने कहा कि मैं बेजुबान था ।  
मैंने एक चिड़िया से पूछा...  
तुम्हारे पंख क्यों कतर डाले गए ?  
उसने कहा, मेरा स्वर लोगों को नहीं भाता था।  
क्योंकि मैं मिलकर गाती थी, इसलिए मेरे गीत में उन्हीं  
क्रान्ति की बू आती थी।  
मैं सोचने लगा.....  
बेजुबान होना और मिलकर गाना  
ही कैसे एमआईटी जाने की निशानी है।

### चाह

मैं महानदी की तरह बहना चाहता हूँ तुम्हारे दिल में  
और देखना चाहता हूँ तुममें  
कोरापुट की पहाड़ियों- सा नैसर्गिक सौंदर्य  
और पाना चाहता हूँ तुममें  
वहाँ के आदिवासियों- सा भोलापन  
ताकि तुम मेरी चाह बनो  
और मैं तुम्हारी।

### अक्स

मैं जैसा लिखता हूँ  
वैसा ही दिखता हूँ  
अपनी रचनाओं में भी

### मेरी रचना

मेरे अन्तर्मन की व्यथा है  
किसी बेबस, लाचार की  
उसके ही शब्दों में  
अभिव्यक्त कथा है।

### दशरथ माँझी

न मैंने भागीरथ को देखा था  
न मैंने कबीर को देखा था देखा तो मैंने तुम्हें भी नहीं था  
पर खुशी इस बात की थी  
कि तुम मेरी ही सदी में जन्मे थे  
दशरथ माँझी।  
तुमने तो पहाड़ का सीना चीरकर  
अपनी जीवन संगिनी को  
मुमताज़ से भी ऊँचा दर्जा दे दिया  
औरों के श्रम से अपनी बेगम का  
महल बनानेवाला शाहजहाँ भी  
तुम्हारी व्यथा के आगे कहाँ टिका ?  
तुम्हारे मेहनती हाथों ने तो  
श्रम की परिभाषा ही बदल दी  
सचमुच, तुम, तुम थे  
तुम्हारे जैसा दूसरा कहाँ  
दशरथ माँझी।

विभाग प्रमुख, हिन्दी व संस्कृत विभाग  
दिल्ली पब्लिक स्कूल  
दामनजोड़ी



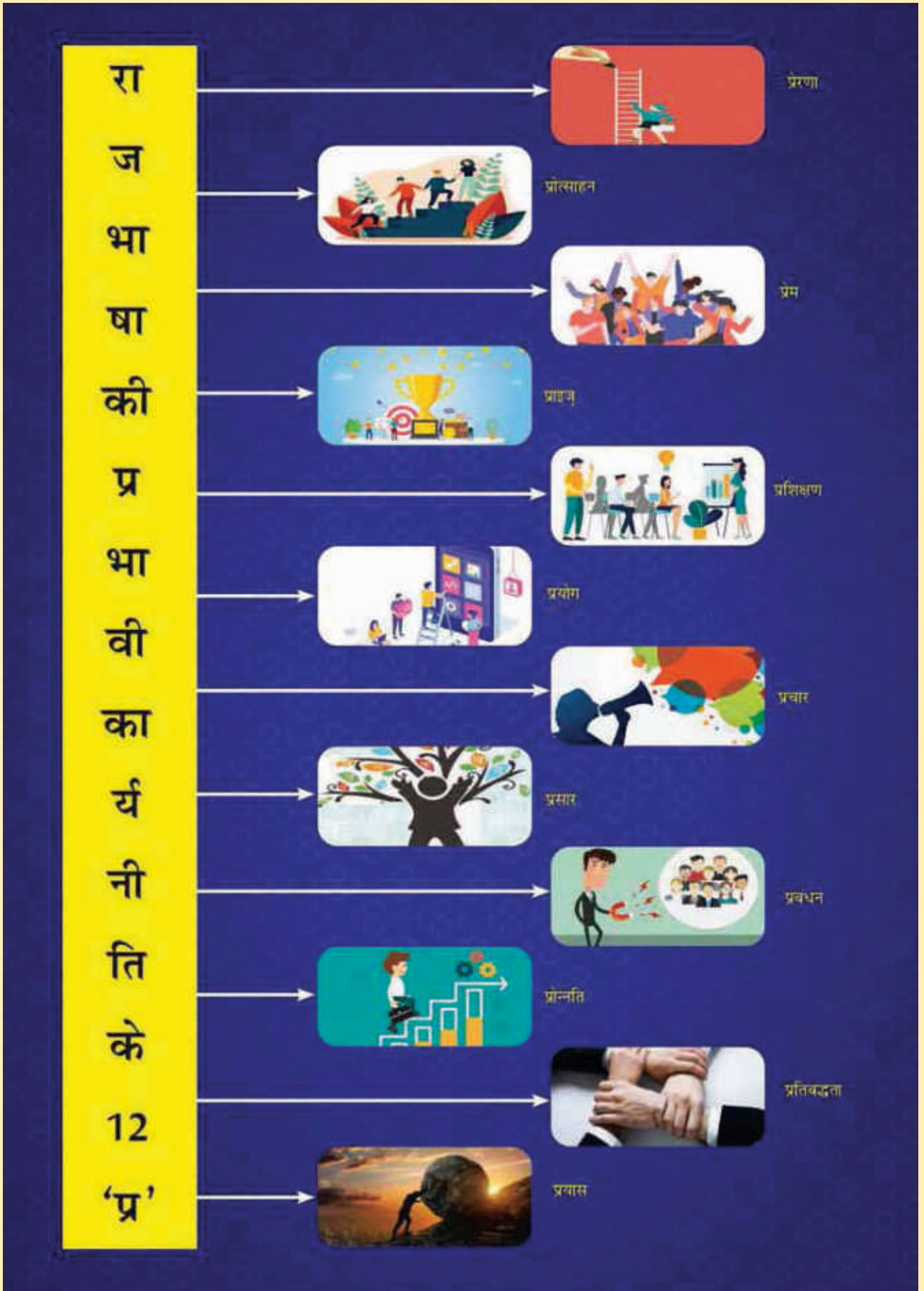


## बेटे की चिट्ठी

स्वाती तिवारी

प्यारी माँ तुम कैसी हो क्या याद मेरी नहीं आती  
 मैं तो अच्छा होऊँगा ही दिन रात जो दुआ हो माँगती,  
 बहुत बड़ा घर है यहाँ पर फिर भी मन नहीं लगता,  
 मिट्टी के घर वाली खुशबु शायद नहीं जो मिलता,  
 खाने में आइटम पे आइटम परोसे जाते हैं,  
 पर पता नहीं वो मन को क्यों नहीं भाते हैं,  
 शायद ये तुम्हारे चूल्हे वाली रोटी सी तृप्ति चाहते हैं,  
 सर्दी में ब्रान्डेड स्वेटर पहना पर उसमे वो गर्माहट न थी,  
 शायद तुम्हारे हाथों से बने स्वेटर की आदत जो थी,  
 थक कर काम से आता हूँ तब भी नींद नहीं है आती,  
 पर तुम्हारे गोद में तो सिर रखते ही बिना थकान के भी आंखें बंद हो जाती,  
 कल प्रमोशन मिली पर खुशियाँ बाँटने वाला कोई न था,  
 घर पर तो स्कूल के रिजल्ट पर भी जश्र होता था।  
 पिछले महीने तबियत थोड़ी नासाज़ थी तो तुम बहुत याद आई,  
 याद है थोड़ी सी झींक पर तुम कितने वैद हकीम थी ले आई,  
 इस बार जब घर आऊँगा तो साथ तुम भी आ जाना,  
 तुम हो तो सब है वरना क्या महल क्या खजाना।

अर्धांगिनी: श्री अखिल कुमार  
 उप प्रबंधक (प्रचालन)  
 प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ

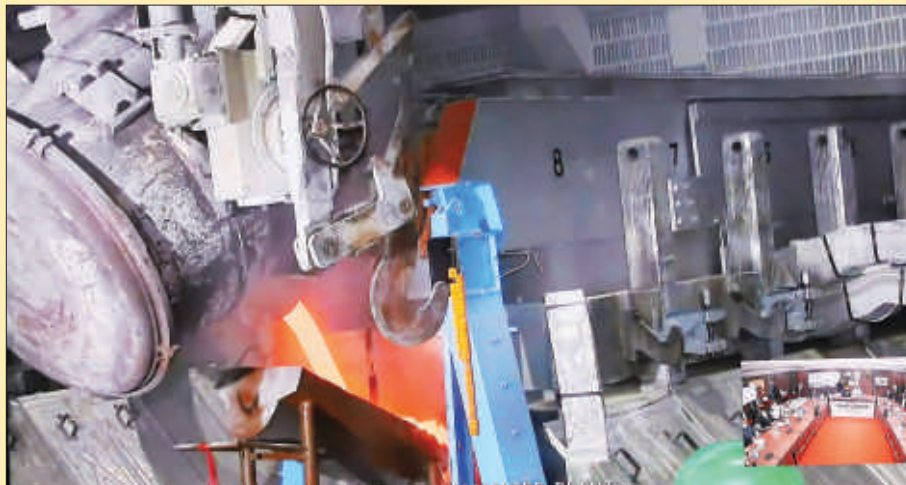




स्थापना दिवस समारोह पर दीप प्रज्वलन



नराकास (उ) अध्यक्ष कार्यालय के रूप में आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला



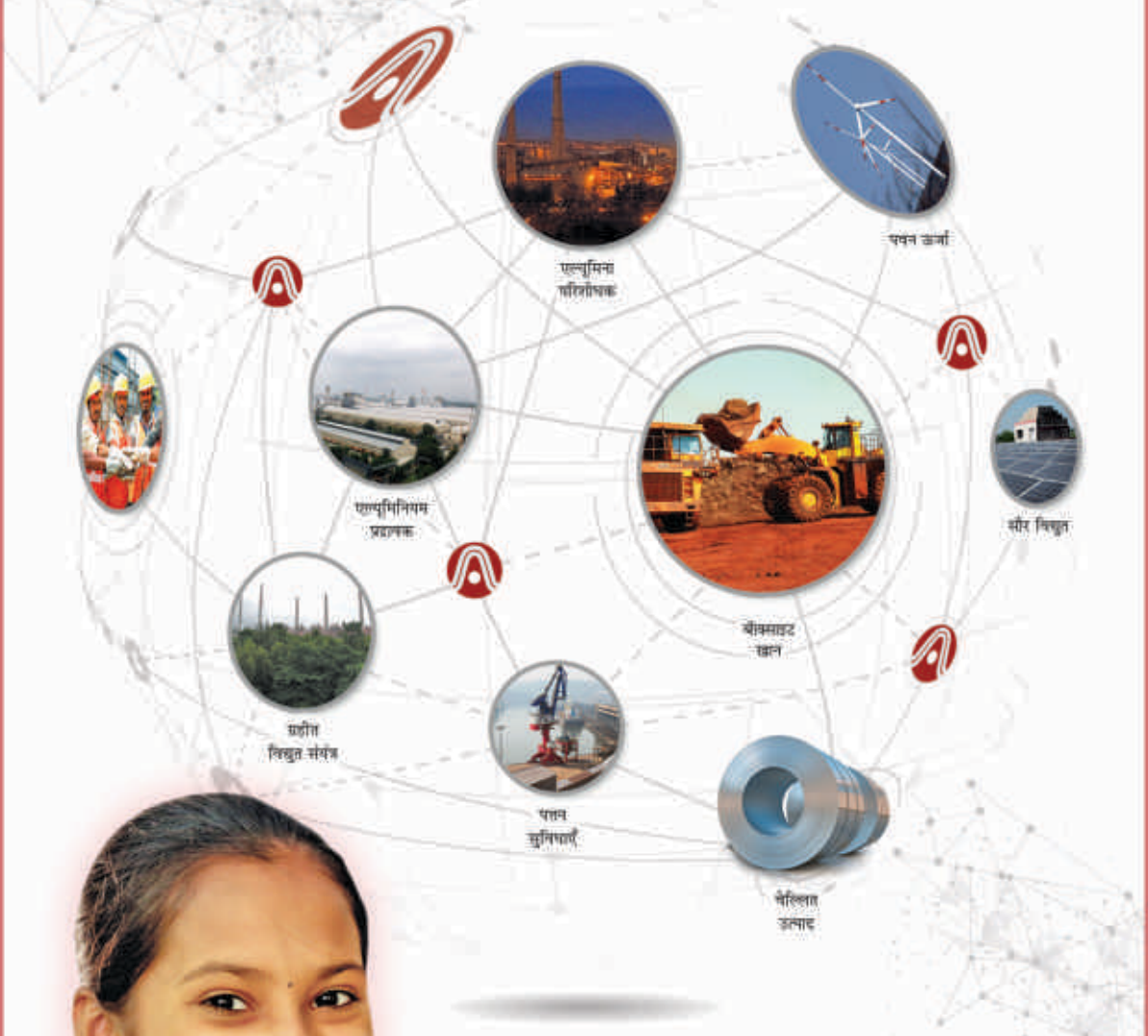
प्रद्रावक संकुल में 960वें पॉट का परिचालन आरंभ



नालको  NALCO

एक नवरात केंद्रीय लोक उद्यम

# भारतीय सार वैश्विक प्रसार



एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्युमिना और एल्युमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्युमिना परिशोधन, एल्युमिनियम प्रदायक, विद्युत सूजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक को समग्र मूल्य शृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं।

- ▲ विश्व में एल्युमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम



नालको  
बॉक्साइट



नालको  
विद्युत

